श्रेष्ठ
स्कूली गीत

श्रेष्ठ
स्कूली गीत

संपादक
आचार्य मायाराम 'पतंग'

ज्ञान गंगा, दिल्ली

प्रकाशक : ज्ञान गंगा, 2/42 अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002
सर्वाधिकार : सुरक्षित / संस्करण : 2022 / मूल्य : चार सौ रुपए
मुद्रक : आर-टेक ऑफसेट प्रिंटर्स, दिल्ली ISBN 978-93-80183-45-9

SHRESHTHA SCHOOLI GEET *Ed.* Acharya Mayaram `Patang'
Published by **GYAN GANGA**
2/42, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002
₹ 400.00

समर्पण

शिक्षकों के कर-कमल में,
यह सुभग रचना समर्पित।
स्नेह से विद्यार्थियों को,
पुंज गीतों का समर्पित॥

भरोसा इसकी सुरभि से,
सरस तन-मन हो सुवासित।
मातृ-भू की भक्ति जागे,
सनातन संस्कृति सुरक्षित॥

विनम्र निवेदन

'श्रेष्ठ स्कूली गीत' आपके सामने हैं। यह मेरी बहुत अरसे पुरानी इच्छा का साकार स्वरूप है। अपने साढ़े इकतालीस वर्ष के शिक्षण काल में विद्यालयों के सांस्कृतिक कार्यक्रम का दायित्व निरंतर सँभालता रहा। सभी प्रधानाचार्य रुचि पहचानकर मुझे यह कार्य सौंपते रहे। किसी भी उत्सव की तैयारी के लिए बहुत कम समय मिलता था। सहयोग तो और भी कम मिला। प्राय: शिक्षक सोचते हैं, उत्सव मनाना उनका कार्य नहीं है। वे अध्यापक कक्ष में बैठकर अनधिकृत विषयों पर चर्चा और बहस करना पसंद करते हैं। सभास्थल पर जाकर बोलना और सुनना सबके लिए रुचिकर नहीं होता। अधिकतर विषयों पर जानकारी का भी अभाव रहता है।

जब तैयारी करने का समय नहीं होता तो बच्चों को तुरंत कुछ कविता, कुछ गीत या भाषण लिखकर दिए जाते हैं। यदि ऐसा न किया जाए तो कार्यक्रम का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता। कभी-कभी अन्य विद्यालयों के उत्सवों में भी सम्मिलित होने का अवसर मिला तो मन में भारी असंतोष रहा। कन्या विद्यालयों में तो दृश्य और भी चिंतनीय मिला। शहीद सुभाषचंद्र बोस की जयंती का अवसर है और लड़कियाँ फिल्मी रिकॉर्ड पर नृत्य कर रही हैं— 'नच लै, नच लै, मेरे यार तू नच लै।' स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर नृत्य प्रस्तुत है, 'शीला की जवानी'।

मुझे सदा ऐसी किसी पुस्तक का अभाव खटकता रहा, जो विद्यालय में मनाए जानेवाले उत्सवों की जानकारी तथा उनसे संबंधित गीत, कविताएँ आदि की सामग्री प्रदान कर सके। मुझे तो शिक्षक जीवन में ऐसी पुस्तक कभी

उपलब्ध न हो सकी, परंतु आनेवाली पीढ़ी के शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए मैंने समय-समय पर जो सामग्री तैयार की, उसे पुस्तक-स्वरूप देने के लिए प्रभात प्रकाशन ने पहल की है। उनके सहयोग एवं परामर्श के कारण ही मैं समस्त सामग्री को पाठकों तक प्रेषित कर पाया हूँ। आकार और मूल्य बहुत अधिक न बढ़ जाए, इसलिए बार-बार काट-छाँट करके ठीक किया गया है। हो सकता है कि किसी महत्त्वपूर्ण गीत या कविता का कोई अंश काट दिया गया हो। इसके लिए मैं अत्यंत विनम्रतापूर्वक क्षमा माँगता हूँ। समकालीन मित्र कवियों की रचनाएँ उनसे अनुमति लेकर सम्मिलित की गई हैं। कुछ विशिष्ट और प्रभावी रचनाएँ उनकी उपादेयता को समझते हुए अनुमति के बिना भी प्रकाशित कर ली गई हों तो मैं अपनी भूल के लिए क्षमा-याचना करता हूँ तथा उन महान् कवियों का आभार भी व्यक्त करता हूँ।

संपादन का कार्य अपनी स्वतंत्र रचनाओं के लेखन से कुछ अधिक कठिन होता है। कहीं-कहीं किसी रचनाकार की पंक्ति में फेर-बदल करके उसे और अधिक संप्रेषणशील बनाया गया है। इसके लिए भी मैं उनकी उदारता और क्षमाशीलता का ही आश्रय लूँगा। सहयोग तो सभी का रहा है, परंतु विशिष्ट कृपा के लिए डॉ. सत्य प्रकाशजी बजरंग, श्री राजेंद्र राजा एवं डॉ. ब्रजपाल सिंह संत का अत्यंत आभारी हूँ।

रचनात्मक सुझावों का स्वागत है। शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के लिए पुस्तक कितनी उपयोगी रही, यह समय बताएगा, आप लोग बताएँगे। रचनात्मक, सुझावपूर्ण समीक्षा लेखक का संबल होती है।

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

एफ-63, गली नं. 3
पंचशील गार्डन, नवीन शाहदरा,
दिल्ली-110032

अनुक्रमणिका

विनम्र निवेदन *7*

1. प्रार्थना 13
2. विनय-गीत 14
3. विनय 16
4. मन की शक्ति देना 17
5. वंदे मातरम् 18
6. प्रभो! बुद्धि निर्मल हमारी बना दो 20
7. भारती वंदना 21
8. नववर्ष गीत (1 जनवरी) 22
9. स्वर जादूगर थे विवेकानंद 23
10. मकर संक्रांति (14 जनवरी) 26
11. प्रयाण-गीत (सुभाष जयंती : 23 जनवरी) 28
12. महापर्व गणतंत्र (26 जनवरी) 30
13. गणतंत्र दिवस पर (26 जनवरी) 32
14. जनतंत्र का जन्म (26 जनवरी) 34
15. प्यारे हिंदुस्तान में (26 जनवरी) 36
16. वह देश कौन सा है (26 जनवरी) 37
17. भारत-संतान 40
18. गणतंत्र दिवस (26 जनवरी) 42
19. वीरों का कैसा हो वसंत 44
20. हंसवाहिनी प्रणाम लो (वसंतपंचमी, सरस्वती पूजा) 46

21. शारदा माँ दो सहारा 47
22. माँ शारदे! हमें यह वर दे 49
23. गुरु रविदास जयंती (माघ पूर्णिमा) 51
24. महिला दिवस (8 मार्च) 52
25. डॉ. राम मनोहर लोहिया (माघ पूर्णिमा) 54
26. सरदार भगतसिंह बलिदान दिवस (23 मार्च) 56
27. कैसी होरी मचाई 58
28. होली (मार्च) 60
29. विक्रमी नव संवत्सर 62
30. वर्ष प्रतिपदा अभिनंदन 64
31. स्वास्थ्य दिवस (7 अप्रैल) 66
32. वैशाखी का हत्याकांड (जलियाँवाला बाग हत्याकांड, 13 अप्रैल) 67
33. जलियाँवाला बाग स्मृति (13 अप्रैल) 69
34. बाबा तुमको कोटि नमन (14 अप्रैल, अंबेडकर जयंती) 71
35. अंबेडकर जयंती (14 अप्रैल) 72
36. श्रीराम नवमी 74
37. राम तो हिंदुस्तान है 76
38. शिवाजी जयंती (वैशाख शुक्ल द्वितीया) 80
39. छत्रपति शिवाजी (शिवाजी जयंती, वैशाख शुक्ल द्वितीय) 82
40. माता ही भगवान् है (8 मई, मातृ दिवस) 84
41. सूरदास जयंती (वैशाख शुक्ल पंचमी) 85
42. खून दिया है मगर नहीं दी···(9 मई, प्रताप जयंती) 86
43. जौहर (9 मई, प्रताप जयंती) 88
44. चरणों में शत बार नमन (वीर सावरकर जयंती, 28 मई) 89
45. कबीर जयंती (ज्येष्ठ पूर्णिमा) 91
46. जनसंख्या दिवस (11 जुलाई) 93
47. तिलक जयंती (23 जुलाई) 95
48. मेरे जननायक की वाणी (जननायक जयप्रकाश नारायण जयंती) 97
49. तुझे शपथ है (23 जुलाई, चंद्रशेखर जयंती) 99
50. मेरे शहीद, तुम चिरंजीव (9 अगस्त) 100
51. स्वराज्य पा सुखी रहो! (15 अगस्त) 102

52. प्रयाण गीत 104
53. क्रांति-दिवस (15 अगस्त) 105
54. सरफरोशी की तमन्ना (9 अगस्त, शहीद दिवस) 107
55. देश-हित मरना पड़े (9 अगस्त, शहीद दिवस) 108
56. वीरों की फसल यहाँ होती 109
57. स्वर्ग-सा यह देश मेरा (15 अगस्त) 111
58. हिमालय (15 अगस्त) 113
59. स्वतंत्रता दिवस (15 अगस्त) 116
60. जाग, तुझको दूर जाना (15 अगस्त) 118
61. आत्म-चिंतन (15 अगस्त) 120
62. बढ़े चलो (15 अगस्त) 122
63. रक्षाबंधन (श्रावण पूर्णिमा) 124
64. बहन बाँध दे रक्षाबंधन (श्रावण पूर्णिमा) 126
65. ज्ञान गंगा बही (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी) 128
66. शिक्षक दिवस (5 सितंबर) 130
67. चेतावनी (5 सितंबर) 131
68. आह्वान (8 सितंबर, साक्षरता दिवस) 132
69. आओ पढ़ लें घड़ी-दो घड़ी (8 सितंबर, साक्षरता दिवस) 134
70. कव्वाली (8 सितंबर, साक्षरता दिवस) 136
71. हिंदी दिवस (14 सितंबर) 137
72. महात्मा गांधी (2 अक्तूबर) 138
73. कैसी थी यह विजय-गर्जना (2 अक्तूबर, गांधी जयंती) 141
74. लाल बहादुर शास्त्री (2 अक्तूबर) 143
75. मर्यादा पुरुषोत्तम राम (विजयादशमी पर्व) 145
76. दशहरा (आश्विन शुक्ल दशमी) 147
77. वाल्मीकि जयंती (शरद पूर्णिमा) 148
78. आदिकवि वाल्मीकि (शरद पूर्णिमा) 150
79. गरीबी से संग्राम (17 अक्तूबर, गरीबी उन्मूलन दिवस) 151
80. ननकू कहाँ चला? (17 अक्तूबर, गरीबी उन्मूलन दिवस) 153
81. क्रांतिदूत सरदार पटेल (31 अक्तूबर) 155
82. युग-युग जगे हमारा दीपक (कार्तिक अमावस्या) 157

83. चलें ज्योति की ओर (कार्तिक अमावस्या) 158
84. दीपक (दीपमाला) 159
85. दीप-मालिका का स्वागत (दीपमाला) 161
86. बाल दिवस पर उद्‌बोधन (14 नवंबर) 163
87. चाचा नेहरू (बाल दिवस, 14 नवंबर) 165
88. खूब लड़ी मरदानी (19 नवंबर, रानी लक्ष्मीबाई जयंती) 167
89. झाँसी की रानी की समाधि पर
(19 नवंबर, रानी लक्ष्मीबाई जयंती) 171
90. गुरु नानक जयंती (कार्तिक पूर्णिमा) 173
91. प्रदूषण (2 दिसंबर, प्रदूषण नियंत्रण दिवस) 174
92. पेड़न कू मत काटो (2 दिसंबर, प्रदूषण नियंत्रण दिवस) 176
93. झंडा ऊँचा रहे हमारा (7 दिसंबर, झंडा दिवस) 178
94. त्रिपथ तिरंगा (7 दिसंबर, झंडा दिवस) 180
95. कारगिल-विजय दिवस (16 दिसंबर) 183
96. विजय-दिवस (16 दिसंबर) 185
97. दुश्मन देश का हत्यारा है (कारगिल विजय दिवस) 187
98. बढ़ना जवान रे (विजय-दिवस 1971) 189
99. सभाएँ बंद कर चल खेत में या कारखानों में
(23 दिसंबर, किसान दिवस) 191
100. हम और हमारी धरती (23 दिसंबर) 192
101. महामना मालवीय जयंती (25 दिसंबर) 194
102. वीर ऊधम सिंह की शहादत (26 दिसंबर) 195
103. तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो 197
104. ईश-विनय 198
105. ऐ मालिक तेरे बँदे हम 200

प्रार्थना

वह शक्ति हमें दो दयानिधे।
कर्तव्य मार्ग पर डट जावें।
परसेवा परउपकार में हम।
निज जीवन सफल बना जावें॥

हम दीन दुखी निबलों-विकलों के सेवक बन संताप हरें।
जो हैं अटके भूले-भटके, उनको तारें खुद तर जावें॥
वह शक्ति···

हम दूरी रखें तमोगुण से, यह इच्छा ईश हमारी है।
कर घृणा दूर हे दयानिधे, सब प्रेम-पाश में बँध जावें॥
वह शक्ति···

छल, दंभ, द्वेष, पाखंड, झूठ, अन्याय से निशि-दिन दूर रहें।
जीवन हो शुद्ध सरल अपना, शुचि प्रेम सुधा-रस बरसावें॥
वह शक्ति···

निज आन-मान मर्यादा का, प्रभु ध्यान रहे, अभिमान रहे।
जिस देश, जाति में जन्म लिया, बलिदान उसी पर हो जावें॥
वह शक्ति···

— अज्ञात

□

विनय-गीत

हे दयामय हम सबों को शुद्धाताई दीजिए।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिए॥

ऐसी कृपा अनुपम अनुग्रह हम पै हो परमात्मा,
हों निवासी इस जगत् के सब के सब धर्मात्मा।
हो उजाला सबके मन में ज्ञान के आलोक से,
और अँधेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से॥
हे दयामय···

खोटे कर्मों से बचें सब तेरे गुण गावें सदा,
भूल जावें दु:ख सारे पावें जन सुख संपदा।
यज्ञ, हवन से हो सुगंधित इस धरा के देश सब,
वायु, जल सुखकारी होवें मिट सकेंगे कलेश तब॥
हे दयामय···

वेद, धर्म प्रचार में होवें सभी पुरुषार्थी,
हो परस्पर प्रीति सब में और बने परमारथी।
अच्छी संगत में रहें और सत्य मारग पर चलें,
तेरे ही होवें उपासक सब कुकर्मों से टलें॥
हे दयामय···

कीजिए सबके हृदय को शुद्ध अपने ज्ञान से,
मान भक्तों में बढ़ाओ अपनी भक्ति दान से।
संयम, क्षमा, तप, धीरता, ब्रह्मचर्य को धारण करें,
प्रभु आपकी यदि हो कृपा सद्‌वृत्ति का पालन करें॥

हे दयामय हम सबों को शुद्धाताई दीजिए।
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिए॥

— अज्ञात

□

विनय

मिलता है सच्चा सुख केवल भगवान् तुम्हारे चरणों में।
पल-पल छिन-छिन मैं विनय करूँ भगवान् तुम्हारे चरणों में॥
मिलता है…

चाहे दुश्मन सब संसार बने, चाहे यह जीवन बहुभार बने।
चाहे मौत गले का हार बने, पर रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
मिलता है…

काँटों पर चाहे चलना हो, चाहे अग्नि में भी जलना हो।
चाहे देश को छोड़ निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
मिलता है…

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों ओर अँधेरा हो।
पर मन विचलित नहीं मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में॥
मिलता है…

— अज्ञात

□

मन की शक्ति देना

हमको मन की शक्ति देना मन विजय करें।
दूसरों की जय से पहले खुद की जय करें॥

मुश्किलें पड़ें तो हम पर इतना करम कर,
साथ दें तो धर्म का चलें तो धरम पर।
इतना हौसला रहे सच का दम भरें।
दूसरों की जय से पहले खुद की जय करें॥
हमको…

भेदभाव अपने दिल से साफ कर सकें,
दूसरों से भूल हो तो माफ कर सकें।
इतना हौसला रहे बदी से हम बचें।
दूसरों की जय से पहले खुद की जय करें॥
हमको…

— अज्ञात

□

वंदे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य श्यामलां मातरम्।
शुभ्रज्योत्स्ना पुलकित यामिनीम्
फुल्लकुसुमित द्रुमदल शोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदां मातरम्
कोटि-कोटि कंठ कलकल-निनाद-कराले
कोटि-कोटि भुजैर्धृत खरकरवाले
अबला केन मा एतोबले।
बहुबलधरिणीं नमामि तारिणीम्
रिपुदलवारिणीं मातरम्।
तुमि विद्या तुमि धर्म्म
तुमि हृदि तुमि मर्म्म
त्वं हि प्राणा: शरीरे
बाहुते तुमि मा शक्ति,
हृदए तुमि माँ भक्ति,
तोमारइ प्रतिमा गड़ि मंदिर-मंदिरे मातरम्।
त्वं हि दुर्गा दशप्रहरधारिणीं
कमला कमलदल विहारिणीं
वाणी विद्यादायिनीं, नमामि त्वाम्

नमामि कमलां अमलां अतुलाम्
सुजलां सुफलां मातरम्
वंदे मातरम्।
श्यामलां सरलां सुस्मितां भूषिताम्
धरणीं भरणीं मातरम्।
वंदे मातरम्॥

— बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय

□

प्रभो! बुद्धि निर्मल हमारी बना दो

प्रभो! बुद्धि निर्मल हमारी बना दो।
पिता, अपनी भक्ति का अमृत पिला दो॥

न मन में हमारे कभी हो अँधेरा
न अज्ञान हो न अविद्या का डेरा
सदा आत्मा में हो प्रकाश तेरा
हमें धर्म की राह चलना सिखा दो॥ 1॥

तेरे चरणों में ध्यान अपना लगाएँ
न मन-रूपी शीशे को मैला बनाएँ
कभी सत्य-मार्ग से पग न हटाएँ
सदाचार का पाठ हमको पढ़ा दो॥ 2॥

न 'नंदलाल' की भक्ति में मन लगाया
विषय-वासना में है जीवन गँवाया
शरमसार होकर तेरे द्वार आया
भँवर में है किश्ती, किनारे लगा दो॥ 3॥

— नरेश कुमार शास्त्री

भारती वंदना

भारती जय विजय करे
कनक-शस्य-कमल धरे।

लंका पदतल-शतदल,
गर्जितोर्मि सागर-जल,
धोता शुचि चरण-युगल,
स्तव कर बहु-अर्थ भरे।

तरु-तृण-वन-लता-वसन,
अंचल में खचित सुमन,
गंगा ज्योतिर्जल-कण,
धवल-धार हार गले।

मुकुट शुभ्र हिम-तुषार,
प्राण प्रणव ओंकार,
ध्वनित दिशाएँ उदार,
शतमुख-शतरव-मुखरे!

—सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

□

नववर्ष गीत

(1 जनवरी)

आया नूतन वर्ष हर्ष से गीत नए गाएँ।
भेदभाव को त्याग परस्पर समरसता लाएँ॥

छोटे-बड़े धनी-निर्धन सब मिलकर काम करें।
चलें प्रगति की ओर निरंतर सबके कष्ट हरें।
फूले-फले समाज स्नेह जल, बादल बरसाएँ।
भेदभाव को त्याग परस्पर समरसता लाएँ॥

कोई है मोहताज कहीं धन के अंबार लगे।
हर भारतवासी के मन में गहरा प्यार जगे।
भारत माता का पूजन कर अमर कीर्ति गाएँ।
भेदभाव को त्याग परस्पर समरसता लाएँ॥

कोई पिछड़ा रहे नहीं, रचना को हाथ बढ़ें।
परम प्रगति की ओर कदम हम सबके साथ बढ़ें।
सदाचार व्रत धरें सहज सेवा पथ अपनाएँ।
भेदभाव को त्याग परस्पर समरसता लाएँ॥

आया है नव वर्ष हर्ष के गीत नए गाएँ।
भेदभाव को त्याग परस्पर समरसता लाएँ॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

स्वर जादूगर थे विवेकानंद

त्याग वीर वैराग्य मूर्ति, अध्यात्म तत्त्व दे गए सदानंद।
विचित्र वेश, था तेज प्रखर, स्वर जादूगर थे विवेकानंद॥

बारह जनवरी, अठारह सौ तिरसठ, शुभ वेला आई।
कलकत्ता में विश्वनाथदत्तजी के घर बजी बधाई।
भुवनेश्वरी माता ने शिशु को, करुणा युत दूध पिलाया था।
माँ के ममत्व ने चंचल को, विश्व पूज्य बनवाया था।
बालक, माँ की शिक्षाओं को, बड़े ध्यान से सुनता था।
देश गरीबी दूर करूँ, वैचारिक बाने बुनता था।
भक्ति गीता को गाता था, शक्ति अर्जित हो जाती थी।
देख गरीबी देश की, उनकी आँखें भी अश्रु बहाती थीं।

काषाय वस्त्र थे दंड कमंडल, भूख मिटाई खाकर कंद।
विचित्र वेश, था तेज प्रखर, स्वर जादूगर थे विवेकानंद॥

श्रीरामकृष्णजी परमहंस को, अपना गुरु बनाया था।
नाम विवेकानंद हुआ, गुणगान विश्व ने गाया था।
मोह किया नहीं माया से, नित परोपकार में ही घूमे।
पर्यटन उनका रहा शौक, सब तीर्थों ने पग चूमे।
बनी योजना धन संग्रह किया, राजे और महाराजों ने।
अमेरिका जाने का खर्चा, जुटा दिया अधिराजों ने।
इक्तीस मई अठारह सौ तिरानबे, बंबई ने झंडी दिखलाई।

जहाज रवाना हुआ यहाँ से, यात्रा की शुभ तिथि आई।
बोस्टन में हेनरी रैआ ने, परिचय-पत्र था हाथ दिया।
जॉर्ज हेल्स ने, विश्व धर्म सम्मेलन तक भी साथ दिया।

सभी धर्म सुंदर हैं प्यारे, स्वामीजी बोले हो स्वच्छंद।
विचित्र वेश, था तेज प्रखर, स्वर जादूगर थे विवेकानंद॥

जटाजूट थे दाढ़ीवाले, थे सर कुछ के घुटे हुए।
आयु में स्वामी सबसे छोटे, जितने संन्यासी जुटे हुए।
'भाइयो और बहनो' कहकर भाषण का रंग जमा डाला।
चरित्र, समाज, विज्ञान, धर्म का, तत्त्वज्ञान समझा डाला।

अपूर्व वाक्पटुता से, हिंदू धर्म सार को समझाया।
समाचार-पत्रों ने उनको, देवदूत था बतलाया।
गौरव मिला, मिली प्रसिद्धि, विज्ञान-ज्ञान सम्मान मिला।
प्रगतिशील राष्ट्रों में, भारत को ऊँचा स्थान मिला॥

इंग्लैंड गए, वहाँ की महिला मार्गरेट, निवेदिता कहलाई।
स्वामी जी की शिष्या बनकर, जो स्वेच्छा से भारत आई।
देश जगाया, शंख बजाया, गाए देशप्रेम के छंद।
विचित्र वेश, था तेज प्रखर, स्वर जादूगर थे विवेकानंद॥

गंगा तट से सटकर, मठ वेलूर बनाया स्वामी ने।
श्रीरामकृष्ण मिशन स्थापित किया था अंतर्यामी ने।
वे कहते थे बलवान बनो, युवकों युग की पहचान बनो।
मूल्य जवानी का समझो, अरि को गुरु की किरपान बनो।

संयम और सादगी से, भारत का ऊँचा भाल करो।
दारिद्रय गुलामी मिट जाए, सब मिलो, देश खुशहाल करो।
गुरुब्रह्मज्ञान को नमन करो, इस देश का मिल संगठन करो।

विघटन करना दो छोड़, शास्त्र के संदेशों का मनन करो।
भारत माता को ही पूजो, बाकी पूजाएँ करो बंद।
विचित्र वेष था तेज प्रखर, स्वर जादूगर थे विवेकानंद॥

—डॉ. संत हास्यरसी

□

मकर संक्रांति
(14 जनवरी)

मगर संक्रांति आई है।
मकर संक्रांति आई है।
मिटा है शीत प्रकृति में—
सहज ऊष्मा समाई है।

उठें आलस्य त्यागें हम, सँभालें मोरचे अपने।
परिश्रम से करें पूरे, सजाए जो सुघर सपने॥

प्रकृति यह प्रेरणा देती।
मधुर संदेश लाई है।
मिटा है शीत प्रकृति में—
सहज ऊष्मा समाई है।

महकते ये कुसुम कहते कि सुरभित हो हमारा मन।
बजाते तालियाँ पत्ते सभी को बाँटते जीवन॥

सुगंधित मंद मलयज में,
सुखद आशा समाई है।
मिटा है शीत प्रकृति में—
सहज ऊष्मा समाई है।

समुन्नत राष्ट्र हो अपना, अभावों पर विजय पाएँ।
न कोई नग्न ना भूखे, न अनपढ़ दीन कहलाएँ॥
करें कर्तव्य सब पूरे,
यही सौगंध खाई है।
मिटा है शीत प्रकृति में—
सहज ऊष्मा समाई है।

नहीं प्रांतीयता पनपे, मिटाएँ भेद भाषा के।
मिटे अस्पृश्यता जड़ से, जलाएँ दीप आशा के॥

वरद गंगा-सी समरसता,
यहाँ हमने बहाई है।
मिटा है शीत प्रकृति में—
सहज ऊष्मा समाई है॥

—रचना शास्त्री

प्रयाण-गीत

(सुभाष जयंती : 23 जनवरी)

'जय हिंद' हमारा नारा है, हम लाल किले की ओर चलें!
काँपे वसुधा, हिल उठे गगन चहुँदिशि चाहे अँधियारी हो!

धू-धू कर ज्वाला भड़क उठे, भूकंप मचे संहारी हो।
सागर गरजन कर हहर उठें, विष बरसे प्रयलंकारी हो।
दिग्गज डोलें, बिजली चमकें, हलचल जीवन में भारी हो।
हम रुकें न फिर भी बढ़ें अथक, अग-जग के बंधन तोड़ चलें!
'जय हिंद' हमारा नारा है, हम लाल किले की ओर चले॥

ले त्याग 'शिवा' का जीवन में, धर ध्यान 'भगत' बलिदानी का।
मानस में ले उल्लास अमर, उस 'जलियाँ' की कुर्बानी का!
'आष्टी' 'चिमूर' की गलियों औ, बलिया की विकट कहानी।
है याद अमर इतिहास हमें 'लक्ष्मी' झाँसी की रानी का।
ले शौर्य अतुल 'नेताजी' का, जग-जीवन से मुँह मोड़ चले!
'जयहिंद' हमारा नारा है, हम लाल किले की ओर चले॥

हम बढ़ें, हमारे जीवन में बरबस तूफान अधीर उठे॥
युग-युग से परवशता पिंजरे का बंदी भारत-कीर उठे।
है जंग लगा जिसमें, पावन वह वीरों की शमशीर उठे॥

हम जलती आहों से रिपु के, प्राणों को जलता छोड़ चलें!
जय हिंद हमारा नारा है, हम लाल किले की ओर चलें॥

हममें 'ढिल्लन' का जोश भरा, 'सहगल' सी जीवन में ज्वाला।
हममें वह दृढ़ता है जिससे, पड़ जाए दुश्मन पर पाला।
हम 'शाहनवाज' के साथी हैं, जिससे जीवित है 'अजनाला'।
हम निश्चय ही भारत माँ के, उर में डालेंगे जयमाला।
अब जूझ अरे हम प्राणों पर, पापों के घट को फोड़ चलें।
मन मचल-मचल कर कहता है, अब लाल किले की ओर चलें ।
'जय हिंद' हमारा नारा है, हम लाल किले की ओर चलें॥

—आचार्य क्षेमचंद्र सुमन

महापर्व गणतंत्र

(26 जनवरी)

यह महापर्व यह महाराग
जिसके स्वर्णिम स्वर संगम में
जन-जन का जीवन गया जाग।

जीवन पथ की सब बाधाएँ
दृढ़-पग को पाकर हुईं फूल।
मस्तक पर पाते चरण-चिह्न
आपत्ति-शिलाएँ बनीं धूल।

थे वे बापू के चरण कि जिनमें
युग-युग की गति हुई लीन।
जिनकी बढ़ती प्रतिध्वनि से ही
कण-कण में था जीवन नवीन।

उस पद की रक्तिम छाप बन गई,
नव स्वतंत्रता का सुहाग,
यह महापर्व, यह महाराग।

यह सत्य अहिंसा का विराट,
वैभव जग विस्मित रहा देख,
जिसमें न प्रेम के बीच विश्व में,

रहे युद्ध की एक रेख।
जन-जन का हो अधिकार,

न हो हिंसा, प्रतिहिंसा की पुकार।
मानव समाज से मिले कि जैसे,
फूल-फूल से सजे हार।

हो राजनीति ही प्रेम-नीति,
व्यवहार धर्म शतदल पराग,
यह महापर्व यह महाराग।

जीवन ही सुख का एक राग,
छब्बीस जनवरी बने टेक।
हम एक किंतु बाहर से हैं
भीतर अनेक पर बने एक।

अब कालेपन की रात नहीं,
अब ज्योतित है जीवन दिनेश।
जन गण मन-अधिनायक अभिनव,
शोभित है भारत दिव्य देश।

श्रृद्धांजलि अर्पित करे इसे,
भूमंडल का प्रत्येक भाग।
यह महापर्व यह महाराग॥

— डॉ. रामकुमार वर्मा

□

गणतंत्र दिवस पर
(26 जनवरी)

मीत गणतंत्र के गीत गाते चलें।
आओ कर्तव्य अपने निभाते चलें॥

राष्ट्र आगे बढ़े हर घड़ी हर पहर,
साफ धड़कन सुनें हर गली हर डगर।
देश की हर दिशा गाँव हो या नगर,
बस हवा गुनगुनाए यही एक स्वर।
गीत झरनों के हमको जगाते चलें।
मीत गणतंत्र के गीत गाते चलें॥

चाहे कमजोर हो दीन हो हीन हो,
मत के अधिकार से क्यों उदासीन हो?
कोई धनवान हो चाहे धनहीन हो,
किंतु कोई किसी के न आधीन हो।
आत्मनिर्भर सभी को बनाते चलें।
मीत गणतंत्र के गीत गाते चलें॥

आदमी आदमी से न रूठे यहाँ,
आदमी आदमी को न लूटे यहाँ।

काम करने का अवसर न छूटे यहाँ,
मेहनती का सहारा न टूटे यहाँ।
आपसी प्रेम निशि-दिन बढ़ाते चलें।
मीत गणतंत्र के गीत गाते चलें॥

एक कानून हो सब जनों के लिए,
राष्ट्र सर्वोपरि हो सभी के लिए।
मातृभाषा मिले हर प्रगति के लिए,
राष्ट्रभाषा सजे आरती के लिए।
देशभक्ति के दीपक जलाते चलें।
मीत गणतंत्र के गीत गाते चलें॥

—आर्चाय मायाराम 'पतंग'

□

जनतंत्र का जन्म

(26 जनवरी)

सदियों की ठंडी-बुझी राख सुगबुगा उठी
मिट्‌टी सोने का ताज पहन इठलाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

जनता? हाँ, मिट्‌टी की अबोध मूरतें वही,
जाड़े-पाले की कसक सदा सहनेवाली,
जब अंग-अंग में लगे साँप हों चूस रहे,
तब भी न कभी मुँह खोल दर्द कहनेवाली।

जनता? हाँ, लंबी-बड़ी जीभ की वही कसम,
जनता, सचमुच ही, बड़ी वेदना सहती है।
सो ठीक, मगर, आखिर इस पर जनमत क्या है?
है प्रश्न गूढ़, जनता इस पर क्या कहती है?

मानो, जनता हो फूल, जिसे एहसास नहीं,
जब चाहो तभी उतार, सजा लो दोनों में,
अथवा कोई दुधमुँही, जिसे बहलाने के
जंतर-मंतर सीमित हों चार खिलौनों में।

लेकिन होता भूडोल, बवंडर उठते हैं,
जनता जब कोपाकुल हो भृकुटि चढ़ाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर-नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

हुंकारों से महलों की नींव उखड़ जाती,
साँसों के बल से ताज हवा में उड़ता है,
जनता की रोके राह, समय में ताव कहाँ?
वह जिधर चाहती, काल उधर ही मुड़ता है।

अब्दों, शताब्दियों, सहस्राब्द का अंधकार
बीता, गवाक्ष अंबर के दहके जाते हैं,
वह और नहीं कोई जनता के स्वप्न अजय,
चीरते तिमिर का वक्ष उमड़ते आते हैं।

सबसे विराट् जनतंत्र जगत् का आ पहुँचा,
तैंतीस कोटि-हित सिंहासन तैयार करो,
अभिषेक आज राजा का नहीं, प्रजा का है
तैंतीस कोटि जनता के सिर पर मुकुट धरो।

आरती लिये तू किसे ढूँढ़ता है मूरख,
मंदिरों, राजप्रासादों में, तहखानों में?
देवता कहीं सड़कों पर मिट्टी तोड़ रहे,
देवता मिलेंगे खेतों में, खलिहानों में।

फावड़े और हल, राजदंड बनने को हैं,
धूसरता सोने से शृंगार सजाती है,
दो राह, समय के रथ का घर्घर नाद सुनो,
सिंहासन खाली करो कि जनता आती है।

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

□

प्यारे हिंदुस्तान में

(26 जनवरी)

एक हमारी छोटी विनती भगवन् रखना ध्यान में।
हमें हमेशा पैदा करना, प्यारे हिंदुस्तान में॥

सिर पर है जो मुकुट सलोना, कंठहार गंगा-जमुना।
हरियाली की चादर मनहर, फल-फूलों का यह गहना।
चंदन भरी हवा लहराती, प्यारे हिंदुस्तान में॥ हमें…

रामकृष्ण की जन्मभूमि है, वीर भरत की ये धरती।
रानी झाँसी और पद्मिनी की गाथा दुनिया कहती।
राणा और शिवाजी जनमे प्यारे हिंदुस्तानी में॥ हमें…

जब तन तजें स्वर्ग में जाएँ, इसकी हमको चाह नहीं।
हों मनुष्य चाहे पशु-पक्षी, उसकी भी परवाह नहीं।
जो भी बनें, बनें हम अपने प्यारे हिंदुस्तान में॥ हमें…

मिले हमें सोने-चाँदी या, मिले हमें हीरे-मोती।
या कुबेर का मिले खजाना, कभी नहीं इच्छा होती।
हम फूटी कौड़ी पाकर, खुश प्यारे हिंदुस्तान में॥ हमें…

इसके पैरों की माटी ही, मेरे सिर का टीका है।
इसके एक घूँट पानी के आगे, अमृत फीका है।
हमें घास की रोटी अच्छी, प्यारे हिंदुस्तान में॥ हमें…

— अज्ञात

□

वह देश कौन सा है
(26 जनवरी)

मनमोहनी प्रकृति की जो गोद में बसा है,
सुख स्वर्ग-सा जहाँ है, वह देश कौन सा है?

जिसका चरण निरंतर रत्नेश धो रहा है,
जिसका मुकुट हिमालय, वह देश कौन सा है?

नदियाँ जहाँ सुधा की धारा बहा रही हैं,
सींचा हुआ सलोना, वह देश कौन सा है?

जिसके बड़े रसीले फल, कंद, नाज, मेवे,
सब अंग में सजे हैं, वह देश कौन सा है?

मैदान गिरिवनों में हरियालियाँ लहकतीं,
आनंदमय जहाँ है, वह देश कौन सा है?

जिसके अनंत धन से धरती भरी पड़ी है,
संसार का शिरोमणि, वह देश कौन सा है?

सबसे प्रथम जगत् में जो सभ्य था यशस्वी,
जगदीश का दुलारा, वह देश कौन सा है?
पृथ्वी निवासियों को जिसने प्रथम जगाया,
शिक्षित किया सुधारा, वह देश कौन सा है?

जिसमें हुए अलौकिक तत्त्वज्ञ ब्रह्मज्ञानी,
गौतम, कपिल, पतंजलि, वह देश कौन सा है?

छोड़ा स्वराज्य तृणवत् आदेश से पिता के,
वह राम था जहाँ पर, वह देश कौन सा है?

निस्स्वार्थ शुद्ध प्रेमी भाई जहाँ भले थे,
लक्ष्मण-भरत सरीखे, वह देश कौन सा है?

देवी पतिव्रता श्री सीता जहाँ हुई थी,
माता-पिता जगत् का, वह देश कौन सा है?

आदर्श नर जहाँ पर थे बाल ब्रह्मचारी,
हनुमान, भीष्म, शंकर, वह देश कौन सा है?

विद्वान् वीर योगी गुरु राजनीतिकों का,
श्रीकृष्ण थे जहाँ पर, वह देश कौन सा है?

विजयी बली जहाँ के बेजोड़ सूरमा थे,
गुरु द्रोण, भीम, अर्जुन, वह देश कौन सा है?

जिसमें दधीचि दानी, हरिचंद, कर्ण-से थे,
सब लोक का हितैषी, वह देश कौन सा है?

वाल्मीकि, व्यास ऐसे जिसमें महान् कवि थे,
श्री कालिदासवाला, वह देश कौन सा है?

निष्पक्ष न्यायकारी जन जो पढ़े-लिखे हैं,
वे सब बता सकेंगे, वह देश कौन सा है?

हम तीस कोटि भाई सेवक सपूत जिसके,
भारत सिवाय दूजा, वह देश कौन सा है॥

— रामनरेश त्रिपाठी

□

भारत-संतान

जगत् गुरु, जगन्मुक्ति दातार,
झुकाता था सिर सब संसार।
सभ्यता के आकर आधार,
किया सम सबको हमने प्यार।
बढ़ाया अमरों में सम्मान, किया यों मनुज-जाति-उत्थान।
वही हम हैं भारत-संतान, वही हम हैं भारत-संतान॥ 1॥

किसी को नहीं बनाया दास,
किसी का किया नहीं उपहास।
किसी का छीना नहीं निवास,
किसी को दिया नहीं है त्रास।
किया है दुखित जनों का त्राण, हाथ में लेकर कठिन कृपाण।
वही हम हैं भारत-संतान, वही हम हैं भारत-संतान॥ 2॥

बहुत दिन सहा न स्वेच्छाचार,
कर दिया दुष्टों का संहार।
विदित भृगुपति का कठिन कुठार,
शिवा की धारदार तलवार॥
राम के व्याल सदृश वे बाण, खा गए और को भेक समान।
वही हम हैं भारत-संतान, वही हम हैं भारत-संतान॥ 3॥

वैध आंदोलन पर तुल गए,
आज हम फिर मिल-जुल गए।
दाग हृदयों के हैं धुल गए,
आज फिर जौहर हैं खुल गए।

हमारा भूत भविष्य महान्, गूँजती गली-गली यह तान।
वही हम हैं भारत-संतान, वही हम हैं भारत संतान॥ 4॥

हमें धमकाए कोई लाख,
उठाए हाथ, दिखाए आँख।
न खोएँगे हम अपनी साख,
करेंगे पूरी निज अभिलाख।
न छोड़ेंगे हम अपनी आन, रहे चाहे जाए यह जान।
वही हम हैं भारत-संतान, वही हम हैं भारत-संतान॥ 5॥

किसी के नहीं छीनते स्वत्व,
बढ़ाते झूठा नहीं महत्त्व।
नहीं कुछ छल-छंदों में तत्त्व,
दिखा देंगे दुनिया को स्वत्व।
चूर कर देंगे हम अभिमान, मिटा के झूठी शेखी शान।
वही हम हैं भारत-संतान, वही हम हैं भारत-संतान॥ 6॥

हमारे जन्मसिद्ध अधिकार,
अगर छीनेगा कोई यार।
रहेंगे कब तक मन को मार,
सहेंगे कब तक अत्याचार?
कभी तो आवेगा यह ध्यान, सकल मनुजों के स्वत्व समान।
वही हम हैं भारत-संतान, वही हम हैं भारत संतान॥ 7॥

—विद्यावती 'कोकिल'

□

गणतंत्र दिवस
(26 जनवरी)

राष्ट्र रक्षा के लिए जनशक्ति का आह्वान है।
वेदमय संस्कृति हमारी आत्मा है, प्राण है॥

सतत गंगाधार पावन रुक नहीं पाई किसी से।
जो मिटाना चाहते थे मिल गए आकर इसी से।
अमित पावन शक्ति सचमुच ईश का वरदान है।
वेदमय संस्कृति हमारी आत्मा है, प्राण है॥

नित नए आघात निशि-दिन हर दिशा से हो रहे हैं।
किंतु हम गहरी अमावस की निशा में सो रहे हैं।
जाग भारत! अरुण भगवा ध्वज तुम्हारी शान है।
वेदमय संस्कृति हमारी आत्मा है, प्राण है॥

भेद में से भेद क्यों पल-पल पनपते जा रहे हैं?
भूलकर निज मूल क्यों सब शत्रुता अपना रहे हैं?
विविधता में एकता है, एकता बलवान है।
वेदमय संस्कृति हमारी आत्मा है, प्राण है॥

हैं न सीमाएँ सुरक्षित देश की भी धर्म की भी।
आज मर्यादा उघड़ती वेश की परिवेश की भी।
सजग हो मग में बढ़ो कर लक्ष्य का संधान है।
वेदमय संस्कृति हमारी आत्मा है, प्राण है॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

वीरों का कैसा हो वसंत

वीरों का कैसा हो वसंत?

आ रही हिमालय से पुकार
है उदधि गरजता बार-बार
प्राची-पश्चिम, भू नभ अपार

सब पूछ रहे हैं दिग्-दिगंत
वीरों का कैसा हो वसंत?

फूली सरसों ने दिया रंग
मधु लेकर आ पहुँचा अनंग
वसु-वसुधा पुलकित अंग-अंग

हैं वीर वेश में किंतु कंत
वीरों का कैसा हो वसंत?

गलबाँही हो, या हो कृपाण
चल-चितवन हो या धनुष-बाण
हो रस-विलास या दलित त्राण

अब यही समस्या है दुरंत
वीरों का कैसा हो वसंत?

भर रही कोकिला इधर तान
मारू बाजे पर उधर गान
है रंग और रण का विधान

मिलने आए हैं आदि अंत
वीरों का कैसा हो वसंत?

कह दे अतीत अब मौन त्याग
लंके! तुझमें क्यों लगी आग
ऐ कुरुक्षेत्र! अब जाग, जाग

बतला अपने अनुभव अनंत
वीरों का कैसा हो वसंत?

हल्दीघाटी के शिलाखंड
ऐ दुर्ग सिंहगढ़ के प्रचंड
राणा-ताना का कर घमंड

दो जगा आज स्मृतियाँ ज्वलंत
वीरों का कैसा हो वसंत?

—सुभद्राकुमारी चौहान

□

हंसवाहिनी प्रणाम लो

(वसंतपंचमी, सरस्वती पूजा)

प्राणम लो, प्रणाम लो, प्रणाम लो,
हंसवाहिनी प्रणाम लो!

सत्य की चुभन हरो, धैर्य की घुटन,
प्राण-प्राण में भरो, प्रीति की किरण।
ज्योतिदायिनी प्रणाम लो,
हंसवाहिनी प्रणाम लो!

ज्योति दो कि खुल सकें, मुँदे-मुँदे नयन,
शक्ति दो कि चल सकें, रुके-रुके चरण!
शक्तिदायिनी प्रणाम लो,
हंसवाहिनी प्रणाम लो!

साथ दो कि साथ में ऋद्धियाँ चलें,
शब्द दो कि शब्द की सिद्धियाँ चलें।
सिद्धिदायिनी प्रणाम लो,
हंसवाहिनी प्रणाम लो!

—राधेश्याम 'बंधु'

□

शारदा माँ दो सहारा

आ गई तेरी शरण में,
शारदे माँ दो सहारा।
डूबती तरणी भँवर में,
भगवती पाए किनारा॥

उफनतीं उत्ताल लहरें,
डगमगाती नाव मेरी।
मात करुणा कर बचा लो,
अब तनिक करना न देरी॥

बुद्धि माँ मेरी सँवारो,
शुद्ध कर दो भावधारा।
आ गई तेरी शरण में,
शारदे माँ दो सहारा।

शत्रु तो क्या मित्र भी माँ,
छल रहे मुझको निरंतर।
क्रोध, बदला, खीज, नफरत,
वार करते नित हृदय पर॥

शुभ्रवसना! हंसवाहिनि!
तोड़ दे अपकीर्तिकारा।

आ गई तेरी शरण में,
शारदे माँ दो सहारा॥

तुम जहाँ रहती वहाँ माँ,
ज्ञान का आलोक जागे।
भारती तेरी कृपा से,
छल, कपट, पाखंड भागे॥

शारदे वीणा तुम्हारी,
पथ करे झंकृत हमारा।
आ गई तेरी शरण में,
शारदे माँ दो सहारा॥

—विनीता 'विनम्र'

माँ शारदे! हमें यह वर दे

वर दे, वर दे, वर दे! माँ शारदे हमें यह वर दे।
भारत के हर नर-नारी को, माता शिक्षित कर दे॥
वर दे···

कमल सुआसन पर सज्जित हो,
मन की कोमल कली खिला दे।
अपनी करुणा और स्नेह से,
मन-मंदिर में दीप जला दे।
हम सबके मन में कल्याणी, आज उजाला भर दे।
वर दे···

हंसवाहिनी हे जगदंबे,
भले बुरे का ज्ञान हमें दे।
शरण आपकी आए अंबे,
सद्‌गुण शील निधान हमें दे।
सरस्वती माता जीवन में सहज मधुरता भर दे।
वर दे···

अमल धवल वस्त्रों से शोभित
निर्मलता का पाठ पढ़ाती।

वीणापाणि आपकी वीणा,
सबको सुख का राग सुनाती।
जगजननी! रसना, रचना में स्फूर्ति जागरण भर दे।
वर दे···

भक्ति ज्ञान विज्ञानदायिनी,
कभी वंदना विफल न होती।
जो भी गहराई में उतरा,
निश्चित उसने पाए मोती।
ज्ञान संपदा से सुखदायिनी! गोद हमारी भर दे।
वर दे···

— कविता चौहान

गुरु रविदास जयंती
(माघ पूर्णिमा)

संत रविदास सरीखौ होय।
अपने कार्य लीन रहते नित ध्यान हरि को होय॥

ना काऊ ते पैसा माँगै, ना कोई भिक्षा लेय।
आगे-पीछे खड़े रामजी, जब माँगै तब देय।
राम-नाम की तान चदरिया, फिक्र फेंक रहे सोय।
संत रविदास सरीखो होय॥

गंगा माता भेंट संत की, हाथ बढ़ा कै लेय।
बदले में कंगन-हीरे के, पंडितजी कूँ देय।
राजा-रानी लोभी-मानी, पग पकड़ै शिष्य होय।
संत रविदास सारखो होय॥

जा पर कृपा करी सो ज्ञानी, हरि को दर्शन होय।
ना काऊ की करै दासता, नाय निराशा होय।
रानी मीरा सतगुरु साधा, अगर साधना होय।
संत रविदास सरीखो होय॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

महिला दिवस
(8 मार्च)

नारी होना नहीं सरल है।
पल-पल पीना यहाँ गरल है॥

पृथ्वी जैसी सहनशीलता,
नित अपनों की चोटें सहना।
मन में घुमड़ रहें हों जलधर,
ओठों से पर कुछ ना कहना।
जाने मुझमें कितना बल है?
नारी होना नहीं सरल है॥

अंबुआ की हूँ शाख सुहानी,
निशि-दिन मैं सुगंध बिखराती
तन-मन बौराता मदमाता,
तृप्त कोकिला तान सुनाती।
समिधा सम जलना हर पल है।
नारी होना नहीं सरल है॥

बेटी-बहू, बहन हूँ स्नेहिल,
ममता से आप्लावित माँ हूँ।

कौन मुझे समझेगा, कब तक?
मैं भी समझ न पाई, क्या हूँ?
तो भी पुरुष बना संबल है।
नारी होना नहीं सरल है॥

—इंदिरा मोहन

□

डॉ. राम मनोहर लोहिया
(माघ पूर्णिमा)

कद छोटा मगर कृतित्व से महान् थे लोहिया।
समता के पोषक, प्रणेता थे प्राण लोहिया।
आस्तिक थे किंतु रूढ़िभंजक थे लोहिया।
सचमुच दलित की, दीन की भाषा थे लोहिया॥

अभिमान से अनभिज्ञ मस्तमौला थे लोहिया।
राष्ट्रीयता के भाव में सराबोर थे लोहिया।
सीने में क्रांतिज्वाल और बाँहों में बल प्रबल।
आजाद सोच मन लिये, तूफान थे लोहिया॥

अहिंसा के पथिक थे, ये मगर थे क्रांति दूत भी।
सिंह-सी गर्जन लिये मृगराज थे लोहिया।
हिंदू थे जनम से, मगर मुसिलम, ईसाई भी।
इनसानियत से पूर्ण, मनुजवर थे लोहिया॥

साहस, सुबुद्धि, त्याग से, प्रतिभा से पूर्ण थे।
सूरज-सा तेज, चंद्र-से शीतल थे लोहिया।
हीरे से मूल्यवान, दृढ़ थे वज्र से कठोर।
बालक-सी सरलता लिये कोमल थे लोहिया॥

लैला ए हिंदुस्तान के, मजनू थे लोहिया।
शोषित, दलित व वंचितों के थे मान लोहिया।
पीड़ित, दुःखी व दीन के, सचमुच थे मसीहा—
'राजन' वो राजनीति की थे शान लोहिया॥

—राजेंद्र प्रसाद 'राजन'

□

सरदार भगतसिंह बलिदान दिवस
(23 मार्च)

जो जन्म भू पर हो गया बलिदान बंधुओ!
अंत:करण से कीजिए सम्मान बंधुओ!!

तेईस वर्ष की उम्र का वह नौजवान था।
था वीरता की मूर्ति वह भारत की शान था।
सबके लिए थी प्रेरणा जन-जन का प्राण था।
गौरव समस्त देश का साहस की खान था।

सरदार भगत सिंह था युग मान बंधुओ!
अंत:करण से कीजिए सम्मान बंधुओ!!

बम तो प्रतीक मात्र था, मन की मशाल का।
आकंठ देशप्रेम के उठते उबाल का।
भीतर धधकती क्रांति की उस उग्र ज्वाल का।
वह था जवाब सामयिक जलते सवाल का।

मिल-जुल शहीद का करें यशगान बंधुओ!
अंत:करण से कीजिए सम्मान बंधुओ!!

भागा नहीं वह सिंह-सा जमकर यों खड़ा था।
पर्वत किसी तूफान के आगे ज्यों अड़ा था।
हँस के जवान मौत के सीने पे चढ़ा था।
माँ के मुकुट में कीमती मोती-सा जड़ा था।

मलयज भी उसका कर रहा गुणगान बंधुओ!
अंत:करण से कीजिए सम्मान बंधुओ!!

फाँसी का फंदा चूमके, चंदा से जा मिला।
बगिया धरा की छोड़ के आकाश में खिला।
हँस के परंतु कह गया मुझको नहीं गिला।
बलिदान मातृभूमि हित जनमों का सिलसिला।

भारत महान् पर हमें अभिमान बंधुओ!
अंत:करण से कीजिए सम्मान बंधुओ!!

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

कैसी होरी मचाई

कैसी होरी मचाई, लला तोहि लाज न आई,
खाली पेट सिलैंडर सिसकै, गैस ने आँख चुराई।
पीटे पाँव, मचायौ हल्ला, तऊ न भई सुनवाई,
ब्लैकिया बने कसाई। कैसी होरी···॥

गेहूँ गरम, चना भए चंचल, चीनी लई अंगड़ाई,
कलाकंद के भाव कोयला, अँगीठी मिमियाई।
द्रवित भई दिया सराई। कैसी होरी···।

कट्टी में न तेल मट्टी को, घरवाली घुर्राई,
भूखे-प्यासे छोरी-छोरा, लैं मुँह फार जम्हाई।
धन्य महँगाई माई। कैसी होरी···।

तजकर चूल्हे-चाकी, काकी सोइ गई ओढ़ रजाई,
इक्कीसवीं सदी के सपने, देख-देख बर्राई।
प्रातः उठकर पछताई। कैसी होरी···॥

रासन के बासन खाली लै, ठाड़े लोग-लुगाई,
भीर देखकर भाज्यौ लाला, बंद दुकान कराई।

मौन अफसर सप्लाई। कैसी होरी··· ॥
शासन के आसन पर 'काका' कैसे करें बुराई,
रूठें वोटर, छूटे कुरसी, इत कूआ उत खाई।
बचे कैसे ठकुराई। कैसी होरी··· ॥

— काका हाथरसी

□

होली
(मार्च)

आज हम होली मनाएँ झूमकर।
आज जन-जन को जगाएँ घूमकर॥

देश पर आपत्तियाँ मँडरा रहीं।
हर कड़ी कमजोर होती जा रही।
हर कदम पर प्रेरणा अलसा रही।
कोई यौवन को जगाए चूमकर।
आज हम होली मनाएँ झूमकर।
आज जन-जन को जगाएँ घूमकर॥

फूट हमको बाँटकर खाती रही।
नित नए संघर्ष करवाती रही।
शक्ति मंदिर में नमन पाती रही।
शक्ति को जाग्रत् करो पद चूमकर।
आज हम होली मनाएँ झूमकर॥

आज मिलकर फिर कभी बिछुड़े नहीं।
यों बनें हम फिर कभी बिगड़ें नहीं।
हम जमाने से कभी पिछड़ें नहीं।
यों बढ़ें हम, फिर न देखें घूमकर।
आज हम होली मनाएँ झूमकर॥

डाल मोहक रंग धोएँ मलिन मन।
महक जाए आज अंत: का सुमन।
कमल सम हमको खिलाएँ रवि पवन।
हर लहर हमको उठाए चूमकर।
आज हम होली मनाएँ झूमकर॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

विक्रमी नव संवत्सर

नूतन संवत्सर आया खुशी मनाओ।
शुभ नए वर्ष के गीत नए फिर गाओ।

गत वर्ष बहुत संघर्षपूर्ण बीता है।
अब इसे सँभालो जो तुमने जीता है।
निज परंपरा का पालन करो धनंजय।
आदर्श तुम्हारे जीवन का गीता है।

कर कर्म राष्ट्र को विजय श्री दिलवाओ।
शुभ नए वर्ष के गीत नए फिर गाओ॥

जो हुआ नहीं अब इस पर पछताना है।
हर कदम लक्ष्य के और निकट जाना है।
मंजिल पाने से पूर्व रुको मत राही।
चट्टानों से भी तुमको टकराना है।

पथ की बाधाएँ मति से मीत हटाओ।
शुभ नए वर्ष के गीत नए फिर गाओ।
रवि-रश्मि विश्व का गहन तिमिर हरती है।
साहसी चरण का वरण विजय करती है।

गिरि शृंग झुके सागर ने पाँव पखारे।
मानवता मग में डग आगे धरती है।

नयनों में निश्चित लक्ष्य सिद्धि को पाओ।
शुभ नए वर्ष के गीत नए फिर गाओ॥

अपनी संस्कृति की गरिमा भूल न जाना।
पावन गंगाजल जन-जन तक पहुँचाना।
स्वागत उनका जो जल में घुल-मिल जाए।
जो रोके पथ, पल भर में घूल चटाना॥

भारत माता को गुरु पद पर बैठाओ।
शुभ नए वर्ष के गीत नए फिर गाओ॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

वर्ष प्रतिपदा अभिनंदन

केशव तव चरणों में अर्पित, करें कोटिशः वंदन।
वर्ष प्रतिपदा भी करती है, केशव तव अभिनंदन॥

युगद्रष्टा थे तुमने समझी थी युग की कठिनाई।
केवल तुमने ही जाना क्यों, पराधीनता आई?
हिंदू को क्या रोग? वैद्य बन नाड़ी तुमने जानी।
क्या होगा उपचार, आपने औषधि भी पहचानी।
तुमने ही सुन पाया केशव, भारत माँ का क्रंदन॥ केशव···

हिंदू कभी संगठित होंगे, तब विश्वास नहीं था।
बालक सेतु बाँध लेंगे, सागर को ज्ञात नहीं था।
अटल सत्य को समझा तुमने, दिव्य दृष्टि के द्वारा।
अविनाशी अब सतत बहेगी, हिंदू जीवन धारा॥
परमपिता ने परम तत्त्व का, तुम्हें कराया दर्शन॥ केशव···

सुख-सुविधा का मोह त्याग, तप का पथ अपनाया।
स्वयं कंटकाकीर्ण राह पर, तुमने कदम बढ़ाया।
योगिराज तुम शक्तिपात से, दिव्य स्फुरण करते थे।
पाते जो सान्निध्य आपका अमित शक्ति भरते थे।
जो भी निकट आपके आया, महका मानो चंदन॥ केशव···

किया राष्ट्र के लिए समर्पित, तन मन धन सब अपना।
हिंदू संगठन का नयनों में, सदा समाया सपना।
लोभ, मोह, भय, काम पराजित, कभी नहीं कर पाए।
आँधी-तूफानों से तुम चट्टानों से टकराए॥
अनुभव करते अपने तन में, तव किरणों का स्पंदन। केशव···

केशव तव चरणों में अर्पित, करें कोटिशः वंदन।
वर्ष प्रतिपदा भी करती है केशव तव अभिनंदन॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

स्वास्थ्य दिवस

(7 अप्रैल)

स्वस्थ तन के वास्ते व्यायाम करना चाहिए।

दूसरों के काम से भी खुश तो रह सकते सभी,
मन को रखना स्वस्थ तो खुद काम करना चाहिए।

आलसी बनकर कभी बिस्तर में लेटे मत रहो,
शीघ्र उठकर घूमने घर से निकलना चाहिए।

काम भी ऐसे करो व्यायाम भी होता रहे,
छोड़ सुस्ती-चुस्त हो प्रसन्न रहना चाहिए॥

जो करो जब भी करो, रोते बिलखते मत करो,
काम हर उत्साह से हिम्मत से करना चाहिए।

मुँह न लटकाए रहो तकलीफ हो बेशक बड़ी,
मुसकराकर आपसी व्यवहार करना चाहिए॥

—आर्चाय मायाराम 'पतंग'

वैशाखी का हत्याकांड

(जलियाँवाला बाग हत्याकांड, 13 अप्रैल)

आज पंचनद की धरती पर धधक उठी है ज्वाला।
विजय चिह्न-सी पड़ी लाल लपटों की माला॥

देशभक्ति की चिता जल उठी, राख हुई मानवता,
गरम खून की आहुति देने, बैठी है बर्बरता।
गोली खाकर मरे यहाँ पर आग बुझानेवाले,
बुझा रहे हैं प्यास खून की, जनता के रखवाले॥

डायर की संतान! खूब रक्षा का भार सँभाला।
आज पंचनद···

लपटों की छाया में रो-रोकर बहती है रावी,
आजादी की कसम यहीं खाई, कहती है रावी।
कहती है सतलज चिनाब से, क्या फिर डायर आया,
भगत सिंह के शव को फिर से उसने यहाँ जलाया॥

गरम खून से तर होकर रोता है जलियाँवाला!
आज पंचनद···

बढ़ी खून की प्यास कहो कैसे जनता को टोकूँ?
आया है तूफान अकेले कैसे उसको रोकूँ?
रोको जैसे वीर लाल मोहन ने उसको रोका,
रोको लाल लहू देकर हिंसक तूफानी झोंका।

यह साहस की घड़ी, कौन है आगे बढ़नेवाला।
आज पंचनद···

रक्तहीन पैंतीस लाख तन जब अकाल ने खाए,
और युद्ध में लाखों ने गोली से प्राण गँवाए।
है यह धरती अमर, उगलती है जन रूपी सोना,
अरे, असंभव है हत्या से इसका बंजर होना।

नई फसल फिर भी फूलेगी, रक्तबीज वह डाला!
आज पंचनद···

सुनी नहीं पदचाप वहाँ कलकत्ते में लाखों की,
कल के भूले मिले खून की प्यास मिटी आँखों की।
झुका यूनियन जैक, तिरंगा फिर ऊँचा फहराया,
बाँध तोड़कर देखो कैसे जन-समुद्र लहराया।

टूट रहा है, दुश्मन ने अंतिम घेरा जो डाला।
आज़ पंचनद···

— राम विलास शर्मा

□

जलियाँवाला बाग स्मृति
(13 अप्रैल)

यहाँ कोकिला नहीं, काक हैं शोर मचाते,
काले-काले कीट, भ्रमर का भ्रम उपजाते।
कलियाँ भी अधखिली, मिली हैं कंटक-कुल से,
वे पौधे, वे पुष्प, शुष्क हैं अथवा झुलसे।

परिमल-हीन पराग दाग-सा बना पड़ा है,
हा! यह प्यारा बाग खून से सना पड़ा है।
आओ प्रिय ऋतुराज! किंतु धीरे से आना,
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना।

वायु चले पर मंद चाल से उसे चलाना,
दु:ख की आहें संग उड़ाकर मत ले जाना।
कोकिल गावे, किंतु राग रोने का गावे,
भ्रमर करें गुंजार, कष्ट की कथा सुनावें।

लाना संग में पुष्प, न हों वे अधिक सजीले,
हो सुगंध भी मंद, ओस से कुछ-कुछ गीले,
किंतु न तुम उपहार-भाव आकर दरसाना,
स्मृति में पूजा हेतु अश्रु थोड़े बिखराना।

कोमल बालक मरे गोली खा-खाकर,
कलियाँ उनके लिए गिराना थोड़ी लाकर।
आशाओं से भरे हृदय भी छिन्न हुए हैं,
अपने प्रिय-परिवार देश से भिन्न हुए हैं।

कुछ कलियाँ अधखिली अरे इसलिए चढ़ाना,
करके उनकी याद अश्रु की ओस बहाना।
तड़प-तड़पकर वृद्ध मरे हैं गोली खाकर,
शुष्क पुष्प कुछ वहाँ गिरा देना तुम जाकर।

यह सब करना, किंतु बहुत धीरे से आना।
यह है शोक-स्थान यहाँ मत शोर मचाना॥

— सुभद्राकुमारी चौहान

□

बाबा तुमको कोटि नमन

(14 अप्रैल, अंबेडकर जयंती)

सबको जीवन दान दिया है, बाबा तुमको कोटि नमन।
तूने मरुथल हरित किया है बाबा तुमको कोटि नमन॥

बन मेहमान एक दल आया, उसने सब छीना हथियाया।
सब कुछ वापस छीन लिया है, बाबा तुमको कोटि नमन॥

जीवन की परतों में जाकर, सच्चाई को सम्मुख लाकर।
तूने हिया बुलंद किया है, बाबा तुमको कोटि नमन॥

सबने तुझको ही उलझाया, लाख भ्रमों का जाल बिछाया।
जाल काट उन्मुक्त जिया है, बाबा तुमको कोटि नमन॥

बौद्ध धम्म का दीप जलाकर, विषम भेद दीवार गिराकर।
सबको समता भाव दिया है, बाबा तुमको कोटि नमन॥

हम सबकी आवाज थे बाबा मंजिल का आगाज थे बाबा।
हमने 'सुमन' पीयूष पिया है, बाबा तुमको कोटि नमन॥

—लखमी चंद्र 'सुमन'

□

अंबेडकर जयंती
(14 अप्रैल)

कह गए हमसे अंबेडकर।
बादलो, बिजलियों से न डर॥

आएँ अनगिन समस्या भले, सत्य का साथ छूटे नहीं।
भाग्य पल-पल रहे रोकता, कर्म का ज्ञान रूठे नहीं॥

कर्म कौशल महा धर्म है—
नित करो कर्म यह जान कर॥ कह गए···

क्रूर अन्याय कोई करे, उसको सहना महापाप है।
दीन बनकर अनाचार का, बोझ ढोना अभिशाप है।
वीरता धीरता है यही—
जिंदगी को बनाओ निडर॥ कह गए···

बौद्ध बनकर बताया यही, कष्ट देना नहीं गैर को।
प्रेम से ही मिलेगी विजय, बैर कब जीतता बैर को।
एक ही आत्मा सब में है—
इसलिए जीव हिंसा न कर॥ कह गए···

सब पढ़ो और आगे बढ़ो, ज्ञान का सबको अधिकार है।
कंटकाकीर्ण पथ हो भले, पहुँचना लक्ष्य के द्वार है।
दूसरों के न दुश्मन बनो—
स्वच्छ होगी तुम्हारी डगर॥
कह गए हमसे अंबेडकर,
बादलों बिजलियों से न डर॥

—आर्चाय मायाराम 'पतंग'

□

श्रीराम नवमी

हम बच्चों के प्यारे राम।
दशरथ-राजदुलारे राम॥
बचपन से ही थे बलवान।
सभी गुणों की वे थे खान॥

पल भर भी विश्राम न था।
मन में डर का नाम न था॥
कर में धनुष-बाण रहता।
दुष्टों के प्राणों को हरता॥

राज-पाट को ठोकर मार।
दीन-दुःखी का कर सत्कार॥
जंगल-जंगल भटके आप।
सहा शीत, वर्षा औ' ताप॥

उत्तर को दक्षिण से जोड़ा।
भेद-भाव का बंधन तोड़ा॥
किए संगठित गिरि, वनवासी।
अभय किए तपसी, संन्यासी॥

पग-पग पर दे कठिन परीक्षा।
जग को दी जीने की शिक्षा॥
किए सदा जन-हित के काम।
तब भगवान् कहाए राम॥

—रामनारायण त्रिपाठी 'पर्यटक'

□

राम तो हिंदुस्तान है

डोली, दुल्हन, कारों में, सूरज, चंदा तारों में,
घाटी और पठारों में, लहरों और किनारों में,
गाँव गली गलियारों में, दिल्ली के दरबारों में,
टी.वी. में, अखबारों में, भाषण कविता नारों में,
धीरे-धीरे भोली जनता है, बलिहारी मजहब की,
ऐसा ना हो देश जला दे, ये चिनगारी मजहब की।

मैं होता हूँ बेटा एक किसानी का,
झोंपड़ियों में पाला दादी-नानी का,
मेरी ताकत केवल मेरी जुबान है,
मेरी कविता घायल हिंदुस्तान है।
मंदिर-मसजिद मुझको बहुत डराते हैं,
ईद-दीवाली भीतर डर करवाते हैं,
पर मेरे कर में है प्याला हाला का,
मैं वंशज हूँ दिनकर और निराला का,
मैं बोलूँगा चाकू और त्रिशूलों पर,
बोलूँगा मंदिर-मसजिद की भूलों पर,
मंदिर-मसजिद में झगड़ा हो अच्छा है,
जितना है उससे तगड़ा हो अच्छा है,
ताकि भोली जनता इनको जान ले,

धर्म के ठेकेदारों को पहचाने ले।
बाबर हमलावर था, मन में गढ़ लेना,
इतिहासों में लिखा है, ये पढ़ लेना,
जो तुलना करते हैं, बाबर-राम की,
उनकी बुद्धि होगी किसी गुलाम की।

राम हमारे भारत के अभिमान हैं,
राम हमारे गौरव के प्रतिमान हैं,
राम हमारे भारत की पहचान हैं,
राम हमारी पूजा हैं, अरमान हैं,
राम हमारे घट-घट के भगवान् है,
राम हमारे अंतर्मन के प्राण हैं,
मंदिर-मसजिद पूजा के सामान हैं।

राम दवा है, रोग नहीं है सुन लेना
राम त्याग है, भोग नहीं है सुन लेना
राम दया है, क्रोध नहीं है जगवालो,
राम सत्य है, शोध नहीं है जगवालो,
राम हुआ है नाम लोक-हितकारी का,
रावण से लड़नेवाली खुद्दारी का।

दर्पण के आगे आओ, अपने मन को समझाओ,
खुद को खुदा नहीं आँको, अपने दामन में झाँको,
याद करो इतिहासों को, सैंतालीस की लाशों को,
जब भारत के टुकड़े कर गई गद्दारी मजहब की,
ऐसा ना हो देश जला दे ये चिनगारी मजहब की,
धीरे-धीरे भोली जनता है बलिहारी मजहब की,
ऐसा न हो देश जला दे, ये चिनगारी मजहब की।

आग कहाँ लगती है ये किस को गम है,
आँखों में कुरसी, हाथों में परचम है,
मर्यादा आ गई, ईसा के कंधों पर,
कूचे-कूचे राम टँगे हैं झंडों पर,
संत हुए नीलाम, चुनावी हट्टी में,
पीर-फकीर जले मजहब की भट्ठी में,
कोई भेद नहीं साधू-पाखंडी में,
सब नंगे हो गए नोटों की मंडी में।

निर्वाचन निर्भर हो गए हथकंडों पर,
है बटुओं का भार पाखंडी पंडों पर,
जो सबको भाता है नीड़ नहीं मिलता,
ऐसा कोई संत-कबीर नहीं मिलता,
जिसके माथे पर मजहब का लेखा है,
हमने उनको शहर जलाते देखा है।

राम नहीं है नारा, इक विश्वास है,
भौतिकता की नहीं ये दिल की प्यास है,
राम नहीं मोहताज किसी के झंडों के,
संन्यासी, साधु-संतों या पंडों के,
राम नहीं मिलते ईंटों के गारे में,
राम मिले निर्धन की आँसू-धारा में,
राम मिले हैं पंचवटी की छाँव में,
राम मिले हैं अंगदवाले पाँव में।
राम मिले हैं वचन निभाती आयु को,
राम मिले हैं घायल पड़े जटायु को,
राम मिलेंगे मर्यादा से जीने में,
राम मिलेंगे हनुमान के सीने में,
राम मिले हैं फल हेतु वनवासों में,

राम मिले हैं केवट के विश्वासों में,
राम मिले अनुसूया की मानवता को,
राम मिले सीता जैसी पावनता को,
राम मिले ममता की माँ कौशल्या को,
राम मिले हैं पत्थर बनी अहल्या को,
राम नहीं मिलते मंदिर के फेरों में,
राम मिले शबरी के झूठे बेरों में।

या तो राम-भक्तों को ये संदेश दो,
राम को देना है तो राम का देश दो,
मैं भी एक सौगंध राम की खाता हूँ,
मैं भी गंगाजल की कसम उठाता हूँ,
मेरी भारत माँ मुझको वरदान है,
मेरी पूजा है मेरा अरमान है,
मेरा पूरा भारत धर्मस्थान है,
मेरा राम तो मेरा हिंदुस्तान है।

—हरिओम पँवार

□

शिवाजी जयंती
(वैशाख शुक्ल द्वितीया)

पुष्पों की सुंदर मालाएँ,
बेशक मंचों पर पहनाएँ,
बिना तपस्या, त्याग, समर्पण—
वीरों का सम्मान न होगा॥

वीर शिवाजी की गाथाएँ, चाहे कर लें याद जवानी।
लेकिन कोई लाभ न होगा, जो न कर सकें हम कुर्बानी।
घर-घर में तस्वीर सजा लें, चौराहों पर मूर्ति लगा लें।
जब तक साहस धैर्य न धारें, वह चरित्र निर्माण न होगा।
वीरों का सम्मान न होगा॥

फिर से जनमें वीर शिवाजी, गीत भले मंचों से गा लें।
लेकिन किसी और के घर में, माता-पिता दूसरे पा लें।
नभ चुंबी मीनार बना लें, आकर्षक नारे खुदवा लें।
श्रद्धा और समर्पण के बिन, छत्रपति का मान न होगा॥
वीरों का सम्मान न होगा॥

अब समर्थ गुरु रामदास के, ज्ञान पूर्ण उपदेश कहाँ हैं?
दादा कोंडदेव के कर्मठ, हितकारी संदेश कहाँ हैं?
जीजाबाई सी माँ होंवें, संस्कारों की खेती बोवें।
बिना सत्य के बिना न्याय के भारत का कल्याण न होगा॥
वीरों का सम्मान न होगा॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

छत्रपति शिवाजी

(शिवाजी जयंती, वैशाख शुक्ल द्वितीया)

राष्ट्रवाद के थे प्रहरी, अन्याय से लड़ते समर रहे।
देदीप्य भाल, भारती लाल, छत्रपति शिवाजी अमर रहे।

हैं राजपूत वहाँ सिक्खवीर, हिंदू नरेश थे खंड-खंड।
रणधीर मराठे उबल पड़े, भारत स्वराज हो जा अखंड।
उन्नीस फरवरी का शुभ दिन, दिनकर दिप-दिप प्रातः वेला।
प्रमुदित साहजी, परिवार मुदित, एक चंद्रबाल पलना खेला।
त्रिकुटी सजग, गौरांग सकल थे, केश-वेश मादक चंदन।
हँसते थे ओष्ठ, प्रातः सूरज करता बालक का अभिनंदन।

तोरण के दुर्ग तोरण बाँधे, लिया जीत पुरंदर अजित किला।
गढ़ परताप समेट लिया, बाई का भी अधिकार मिला।
अफजल ने जब क्रोधित होकर, फँसा शिकंजा वीर लिया।
बल बाघ चपलता, चला बघनखा, ढीठ पेट को चीर दिया।

शहनाई बारात की बाज रही, निःशंक पहुँच गए लालमहल।
शाइस्ता कटा भगा उँगली, भंग में बदली सब चहल-पहल।
तुप-तुपक तोप गोल गरजे, धक लरज रहे अरि हिया विकल।

भालों की नोक लहु चाट रही, दुश्मन दल मच गई थी हलचल।
ध्वज मील सहस्त्रों फहर गया, वर विजयश्री हिल चँवर रहे।
देदीप्य भाल, भारती लाल, छत्रपति शिवाजी अमर रहे।

— डॉ. संत हास्यरसी

□

माता ही भगवान् है

(8 मई, मातृ दिवस)

माँ से बड़ा नहीं है कोई गाते वेद पुराण हैं।
सच मानो तो इस धरती पर माता ही भगवान् है॥

अपना तन-मन काट-छाँटकर
संतानों को देती है।
देना ही माँ का स्वभाव है
कभी न कुछ भी लेती है॥
माँ ममता की करुण मूर्ति है सफल गुणों की खान है।
सच मानो तो इस धरती पर माता ही भगवान् हैं॥

बिना स्वार्थ के सब के हित की
बात करे देवत्व वही।
बिना कहे सब बात समझ ले
होता है मातृत्व वही॥
दान, दया, कर्तव्य, प्रेम ही माता की पहचान है।
सच मानो तो इस धरती पर माता ही भगवान् है॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

सूरदास जयंती
(वैशाख शुक्ल पंचमी)

ऊधौ जाहु तुमहिं हम जानैं।
स्याम तुमहिं हमको नहिं पठवौ तुम हो बीच भुलाने।
ब्रज नारिन को जोग कहत हो बात कहत न लजाने।
बड़े लोग विवेक न तुम्हरे, ऐसे भए अयाने।
हम सो कहो लई हम सहिकै, जिय गुनि लेहु सयाने।
कहूँ अबला कैंह दसा दिगंबर भ्रष्ट करो पहिचाने।
साँच कहो तुमको अपनी सौं, बूझति बात निदाने।
सूर श्याम जब तुमहिं पठायौ तब नैंकहु मुसकाने।

मैया मोरी मैं नहिं माखन खायौ।
भोर भई गैयन के पाछे, मधुबन मोहि पठायौ।
चार पहर बंसी वट भटक्यो साँझ परै घर आयौ।
मैं बालक बहियन को छोटो छीको केहि बिधि पायौ।
ग्वाल-बाल सब बैर परे हैं, बरबस मुख लपटायौ।
तू मैया मति की अति भोरी, उनके कहे पतियायौ।
यह ले अपनी लकुटि कमरिया, बहुतहि नाच नचायौ।

—महाकवि सूरदास

□

खून दिया है मगर नहीं दी···

(9 मई, प्रताप जयंती)

युगों-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है॥

इस धरती ने जन्म दिया है, यही पुनीता माता है,
एक प्राण दो देह सरीखा, इससे अपना नाता है,
यह धरती है पार्वती माँ, यही राष्ट्र शिवशंकर है,
दिग्मंडल साँपों का कुंडल कण-कण रुद्र भयंकर है,
यह पावन माटी ललाट की ललित लाम ललाटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है॥

इस भूमि-पुत्री के कारण भस्म हुई लंका सारी,
सुई नोक भर भू के पीछे हुआ महाभारत भारी,
पानी-सा बह उठा लहू था पानीपत के प्रांगण में,
बिछा दिए रिपुगण के शव थे उसी तराइन के रण में,
पृष्ठ बाँचती इतिहासों के अब भी हल्दी घाटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है॥

सिक्ख, मराठे, राजपूत, बंगाली, क्या मद्रासी,
इसी मंत्र का जाप कर रहे युग-युग से भारतवासी,

बुंदेले अब भी दोहराते यही मंत्र है झाँसी में,
देंगे प्राण न देंगे माटी गूँज रहा है नस-नस में,
शीश चढ़ाया कटा के गरदन या अरि गरदन काटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है॥

इस धरती के कण-कण पर है चित्र खिंचा कुर्बानी का,
एक-एक कण छंद बोलता चढ़ी शहीद जवानी का,
इस माटी के कण-कण में ज्वालामुखियों के शोले हैं,
धावा बोला अगर किसी ने, ये दावा से डोले हैं,
इन्हें चाटने बढ़ा उसी ने, धूल धरा की चाटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है॥

— अज्ञात

जौहर

(9 मई, प्रताप जयंती)

आज तक किसने अनल की, भूख की ज्वाला बुझाई,
जो चला ज्वाला बुझाने, बुझ गया पत भी गँवाई।

लाल-लाल कराल जीभों को निकाल बढ़ा रही थी,
अग्नि की हिलती शिखाएँ, प्रलय पाठ पढ़ा रही थीं।

आज इस नरमेध रव में, बाल-केलि दुलार स्वाहा,
धधकती जलती चिता में, माँ-बहन के प्यार स्वाहा।

साथ आहुति में अनल के, मेदिनी के भोग स्वाहा,
लो पिता-माता-प्रिया के, योग और वियोग स्वाहा।

मंदिरों के दीप स्वाहा, राजमहल-विभूति स्वाहा,
आज कुल की रीति पर लो, नीति-भूषित भूति स्वाहा।

अमर वैभव से भरे इस, ज्वाल में घर-द्वार स्वाहा,
आन-बान सतीत्व पर लो, आज कुल परिवार स्वाहा।

— श्याम नारायण पांडेय

□

चरणों में शत बार नमन

(वीर सावरकर जयंती, 28 मई)

कर्मवीर सावरकरजी के चरणों में शत बार नमन।
तन से बारंबार नमन, मन से बारंबार नमन॥

क्रांति युद्ध का तत्त्वज्ञान समझानेवाले ज्ञानी थे।
स्वतंत्रता के लिए जूझते नेता थे, सेनानी थे।
स्वयं मंत्रद्रष्टा थे, ऋषि थे, कठिन साधना था जीवन।
तन से बारंबार नमन, मन से बारंबार नमन॥ कर्मवीर...

अद्‌भुत तड़प अलौकिक प्रतिभा धीरवीर तेजस्वी थे।
बुद्धिमान निर्भय त्यागी वे, अनुपम विकट तपस्वी थे।
ओजस्वी कविता दृढ़वाणी, भरती मृतकों में जीवन।
तन से बारंबार नमन, मन से बारंबार नमन॥ कर्मवीर...

देशभक्ति की पराकाष्ठा अनुपमेय व्यक्तित्व सुघर।
आग उगलते लेख, वक्तृता, ध्येयपूर्ण उदात्त प्रखर।
सुदृढ़ शरीर निश्चयी प्रज्ञा, भावुक, निर्मल, निश्छल मन।
तन से बारंबार नमन, मन से बारंबार नमन॥ कर्मवीर...

मरना नहीं मारना सीखो स्वाभिमान का मंत्र यही।
अंडमान की दीवारों ने सावरकर की कथा कही।
श्रद्धा से नत करें समर्पण, अपने मन के भाव सुमन।
तन से बारंबार नमन, मन से बारंबार नमन॥

कर्मवीर सावरकरजी के चरणों में शत बार नमन।
तन से बारंबार नमन, मन से बारंबार नमन॥

—आर्चाय मायाराम 'पतंग'

□

कबीर जयंती
(ज्येष्ठ पूर्णिमा)

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय।
ढाई आखर प्रेम का, पढ़ै सो पंडित होय॥

प्रेम न बाड़ी ऊपजे, प्रेम न हाट विकान।
जो घट प्रेम न संचरे, सो घट जान मसान॥

प्रेम प्रीति का चोलना, पहर कबीरा नाच।
तन-मन ता पर वारहू, जो कोई बोलै साँच॥

सोना सज्जन साधुजन, टूटि जुरै सौ बार।
दुर्जन कुंभ कुम्हार के, एकै धका दरार॥

जहाँ दया तँह धर्म है, जहाँ लोभ तँह पाप।
जहाँ क्रोध तँह काल है, जहाँ छिमा तँह आप॥

कबिरा गर्व न कीजिए, काल गहे कर केस।
ना जाने कित मारि हैं, क्या घर क्या परदेस॥

दस द्वारे का पींजरा, तामै पंछी पौन।
रहिबै को अचरज नहीं, गए अचंभा कौन॥

मन के मते न चालिए, मन के मते अनेक।
जो मन पर असवार है, सो साधू कोई एक॥

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागौं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने गोविंद दियौ बताय॥

— संत कबीरदास

□

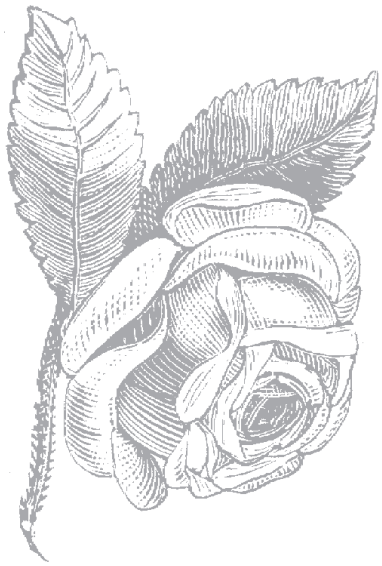

जनसंख्या दिवस
(11 जुलाई)

जनसंख्या जो रहे बढ़ाते अपने ही परिवार की।
बात करोगे कैसे भैया, भारत के उद्धार की?

जितना अन्न धरा उपजाती, सब थोड़ा पड़ जाएगा।
फल, सब्जी या मिर्च मसालों का तोड़ा पड़ जाएगा॥

साख समापन हो जाएगी, कपड़े के व्यापार की।
बात करोगे कैसे भैया, भारत के उद्धार की?

अपने घर के बच्चे भी, फिर अधनंगे रह जाएँगे।
क्या भूखी-नंगी जनता से भारत नया बसाएँगे?

सही कल्पना क्या है अपनी, एक सुखी संसार की?
बात करोगे कैसे भैया, भारत के उद्धार की?

उन्नति के साधन सारे, होते जाते बेकार यहाँ।
बेकारों की सूची के लगते जाते अंबार यहाँ॥

नहीं नौकरी ना मजदूरी, कमी पड़े व्यापार की।
बात करोगे कैसे भैया, भारत के उद्धार की?

दिन-दिन दूनी रात-चौगुनी महँगाई बढ़ती जाती।
वर्तमान का सुख भी खोया, भूले संस्कृति की थाती॥

सफल भविष्य बनेगा कैसे, कमी रहे आहार की?
बात करोगे कैसे भैया, भारत के उद्धार की?

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

तिलक जयंती

(23 जुलाई)

वज्रपात! मर मिटे हाय हम! रोने दो, संहार हुआ,
कसक कलेजे काढ़ दुखी हैं, बुरे समय पर वार हुआ।

नभ कंपित हो उठा, करोड़ों में यह हाहाकार हुआ,
वही हाथ से गिरा, भँवर में जो मेरा पतवार हुआ।

मैं ही हूँ, मुझ इकलौती ने, अपना जीवन-धन खोया,
रोने दो, मुझ हतभागिन ने, अपना मन-मोहन खोया।

आधी रात करोड़ों बंधन, अन्यायों से झुकी हुई,
पराधीनता के चरणों पर, आँसू ढाले रुकी हुई।

अकुलाते-अकुलाते मैंने एक लाल उपजाया था,
था पंचानन 'बाल' खलों का एक काल उपजाया था।

जिसने टूटे हुए देश के विमल प्रेम-बंधन तोड़े,
कसे हुए मेरे अंगों के कुटिल काल-बंधन तोड़े।

खड़ा हुआ नि:शंक शिवानी पर बलि होना सिखलाया,
जहाँ सताया गया, वहाँ वह शीश उठा आगे आया।

बागी, दागी कहलाने पर, जरा न मन में मुरझाया,
अगणित कंसों ने सम्मुख सहसा श्रीकृष्ण खड़ा पाया।

जहाँ पुकारा गया, वीर रण करने को तैयार रहा,
मातृभूमि के लिए लड़ाका, मरने को तैयार रहा।

'तू अपराधी है तूने क्यों गाए भारत के गीत वृथा?
तू ढोंगी बकता फिरता है तुच्छ देश की कीर्ति-कथा!

तुझ-सों का रहना ठीक नहीं, ले देता हूँ काला पानी',
हे वृद्ध महर्षि! हिला न सकी कायर जज की कुत्सित वाणी।

क्यों आर्य-देश के तिलक चले, क्यों कमजोरों के जोर चले,
तुम तो सहसा उस ओर चले, यह भारत माँ किस ओर चले?

शुचि प्रेम-बीज सब हृदयों में, गाली खाते-खाते बोया,
सद्‌भावों से उसको सींचा, उसका भारी बोझा ढोया।

तुझको अब कष्ट नहीं देंगे, हाथों में झंडा ले लेंगे,
मांडले के क्या सूली के, कष्टों को सादर झेलेंगे।

इंग्लैंड नहीं नभ-मंडल में, हम तेरे हैं, हो आवेंगे,
तूने नरसिंह बनाए हैं, अपना तिलकत्व दिखावेंगे।

तू देख देश स्वाधीन हुआ, उस पर हम लाखों जिएँ-मरें,
बस इतना कहना मान तिलक, हम तेरे सिर पर तिलक करें।

मेरे जीते-जी पूरा स्वराज्य भारत पाए अरमान यही,
बस शान यही, अभिमान यही, हम तीस कोटि की जान यही।

— माखनलाल चतुर्वेदी

□

मेरे जननायक की वाणी

(जननायक जयप्रकाश नारायण जयंती)

गहन नील अंबर में गरजी, मेरे जननायक की वाणी।
गूँजी अनिल, अनल, जल-थल में मेरे जननायक की वाणी॥

जागो-जागो अमृत सुवन तुम, जागो-जागो सोनेवालो,
जागो तुम सिंहों के छौनो, जागो सबकुछ खोनेवालो।

जागो देश-काल निर्माता, जागो तुम निज भाग्य-विधाता,
जागो इतिहासों के ज्ञाता, जागो तत्त्व ज्ञान के दाता।
जागो हिंदू-सिख-मुसलमान, जागो मेरे मानव प्राणी,
अनिल, अनल, जल-थल में गरजी, मेरे जननायक की वाणी॥

हिमगिरि से टकराकर व्यापी इस वाणी की ध्वनि जग भर में,
गूँजी यह ध्वनि जग-मनुजों के हृदय में अंततम में।
गरजी हिंद महासागर की प्रतिध्वनिमय उत्ताल तरंगें,
जग के महार्णवों में उमड़ी अभिनव वीचि-विलास उमंगें।
लेकर यह संदेश सुहावन चहुँदिशि वही हवा रस-सानी,
गहन नील अंबर में गरजी, मेरे जननायक की वाणी।

ये नव-नव उद्‌बोधन के स्वर, नवनिर्माण-प्रेरणाकारी,
ये आत्मार्पण के पावन स्वर, ये नित नवल स्फूर्ति-संचारी।
महानाश का यह संदेशा, यह निजत्व प्राप्ति का निमंत्रण,
यह अस्वीकृति की गंभीर ध्वनि, यह विप्लव का रुद्र प्रभंजन।
अब तक तुमने क्या न सुनी यह भय-भंजन वाणी कल्याणी,
गहन नील नभ में गरजी है, मेरे जननायक की वाणी।

मेरा पूरब, मेरा पश्चिम, मेरा दक्षिण, मेरा उत्तर,
मेरी गंगा, मेरी यमुना, मेरे सखर, मेरे भूधर।
आज सभी ये उद्‌घोषित हैं, मेरे जन नायक के स्वर से,
गूँजी है यह मंद महाध्वनि, युग-युग के सागर-मंथन से।
यह वाणी है मम मानव के, अमर प्राण की अमिट निशानी,
गूँजी अनिल, अनल, जल-थल में मेरे जननायक की वाणी॥

—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'

□

तुझे शपथ है

(23 जुलाई, चंद्रशेखर जयंती)

तुझे शपथ है, देशभक्ति की देशभक्त के नारों की।
तुझे शपथ है, कसी हुई जंजीरों की झनकारों की॥
तुझे शपथ है, बँधे प्रतिज्ञा के लोहे के तारों की।
तुझे शपथ है शहीद-बेवाओं की चीत्कारों की॥
तुझे शपथ है एक साथ जीने-मरनेवाले क्षण की।
तुझे शपथ है, भरे अभी तक नहीं गुलामी के व्रण की॥
आजादी के लिए अभी आगे लड़नेवाले रण की।
हँसते हुए झूलनेवाले फाँसी के महान् क्षण की॥
तुझे शपथ है, आजादी की, ओ जाँबाज जवाँ मेरे!
बुझा आग बरबादी की, जो है तेरे घर को घेरे॥
तुझे शपथ है, दृश्य देख मत जननी की बरबादी का।
पहले अपना काट शीश, फिर काट शीश आजादी का॥

— सोहनलाल द्विवेदी

□

मेरे शहीद, तुम चिरंजीव

(१ अगस्त)

मेरे शहीद, तुम चिरंजीव!
केसरिया तन पर वक्ष तान, कूदे पावक में नवजवान,
होली जल उठी, जली सतियाँ, अब भी कण-कण में विद्यमान।
मेरे शहीद, तुम चिरंजीव!

वह करामात थी वीरों में, मेवाड़ देश के रणधीरों में,
अड़ गए हिमालय के समान, बँध सकी न माँ जंजीरों में।
मेरे शहीद, तुम चिरंजीव!

बढ़ चले निडर हथियारों में, चढ़ चले निठुर तलवारों में,
पीछे न एक डग फिरे कभी, चुन गए वीर दीवारों में।
मेरे शहीद, तुम चिरंजीव!

सह भूख-प्यास की ज्वालाएँ, पहनी कड़ियों की मालाएँ,
कारा के रौरव से निकाल, ले गईं तुझे सुरबालाएँ।
युग-युग यतींद्र, तुम चिरंजीव!
मेरे शहीद, तुम चिरंजीव!

अपने तन को बरबाद किया, उजड़े घर को आबाद किया,
माता की जय का नाद किया, पर हम सबको आजाद किया।
आजाद भगतसिंह चिरंजीव!
मेरे शहीद, तुम चिरंजीव!

रख दिया शीश तलवारों पर, थे कूद पड़े अंगारों पर,
थी एक लगन, था एक ध्येय, सो गए रक्त फौहारों पर।
मेरे गणेश, तुम चिरंजीव!
मेरे शहीद, तुम चिरंजीव!

जलियान-रक्त से निकल पड़े, प्रज्वलित धधकते अंगारे,
लो आग क्रांति की भड़क उठी, डूबे रवि शशि, डूबे तारे।
मेरे ऊधम सिंह, चिरंजीव!
मेरे शहीद, तुम चिरंजीव!

तुम पग-पग वीर चलो दिल्ली, जिसका जय हिंद प्रयाण-गीत
उसके चरणों से लिपट गई, हिंदू-मुसलिम की हार-जीत
मेरे शहीद, तुम चिरंजीव!
मेरे शहीद, तुम चिरंजीव!

—श्याम नारायण पांडेय

□

स्वराज्य पा सुखी रहो!

(15 अगस्त)

उठो, स्वदेश के सपूत कर्मक्षेत्र में बढ़ो!
बिसार द्वेष दंभ पाठ प्रेम का सदा पढ़ो!
स्वराज्य-प्राप्ति के लिए विशेष यत्न कीजिए।
स्वदेश के सुधार में सहर्ष ध्यान दीजिए।
स्व-जन्मभूमि के लिए अनंत कष्ट भी सहो।
बलिष्ठ धीर-वीर हो, स्वराज्य पा सुखी रहो॥

स्वतंत्र देश हो न दास, दैन्य-दु:ख को सहे।
समृद्धि-युक्त हों सभी, न दीनता रहे।
सदैव शांति सत्य शील का प्रभा-प्रकाश हो।
परावलंब नाश हो स्वदेश श्रीनिवास हो।
अनन्य देशप्रेम की तरंग में सदा बहो।
बलिष्ठ धीर-वीर हो, स्वराज्य पा सुखी रहो॥

मनुष्य जन्म पा उदार योग्य साहसी बनो।
अनीति अंधकार वैर के विकार को हरो
विपत्ति विघ्न-व्यूह नीति से नहीं हृदय हिले।
समस्त भारतीय वृंद नित्य मोद से मिलें।

विलुप्त भारतीय शक्ति विश्व में पुनः लहो।
बलिष्ठ धीर-वीर हो, स्वराज्य पा सुखी रहो॥

निरन्न वस्त्रहीन हैं दुःखी किसान रो रहे।
विचारते न सभ्य, नेत्र मूँद हाय सो रहे।
दुकाल रोग शोक लूट घूस जी लजा रहे।
बचाइए प्रभो, अनंत कष्ट हैं सता रहे।
दुखावसान हों स्वराज्य के संदेश को कहो!
बलिष्ठ धीर-वीर हो, स्वराज्य पा सुखी रहो॥

—हरिश्चंद्र देव वर्मा 'चातक'

□

प्रयाण गीत

न हाथ एक शस्त्र हो, न साथ एक अस्त्र हो,
न अन्न नीर वस्त्र हो!
हटो नहीं, डटो वहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
रहे समक्ष हिम शिखर, तुम्हारा प्रण उठे निखर,
भले ही जाए तन बिखर।
रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
घटा घिरी अटूट हो, अधर में कालकूट हो,
वही अमृत का घूँट हो।
जिए चलो, मरे चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
गगन उगलता आग हो, छिड़ा मरण का राग हो,
लहू का अपने फाग हो।
अड़ो वहीं, गड़ो वहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
चलो नई मिसाल हो, जलो नई मशाल हो,
बढ़ो नया कमाल हो।
रुको नहीं, झुको नहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो।
अशेष रक्त तौल दो, स्वतंत्रता का मोल दो,
कड़ी युगों की खोल दो।
डरो नहीं, मरो वहीं, बढ़े चलो, बढ़े चलो॥

—सोहनलाल द्विवेदी

□

क्रांति-दिवस
(15 अगस्त)

बलिदानी वीरों की स्मृति के अरचन का अवसर आया,
पुलक मिली प्राणों को अनुपम, थिरक उठी जन-मन-काया।

आज 'बहादुरशाह जफर' के प्राणों को चेतना मिली,
'सत्तावन' की दीपशिखा के शलभों की वेदना खिली।
'झाँसी वाली' भी पुलकित है, अपनी वज्र कहानी से,
'कानपुर' के 'शाह पेशवा' की गाथा बलिदानी से।

बुंदेले हरबोलों का यश-सौरभ चहुँदिशि है छाया,
बलिदानी वीरों की स्मृति के अंकन का अवसर आया।
आज उठा अँगड़ाई लेकर 'जलियाँवाला बाग' अमर,
आज डटा बलिदानी 'साबरमती' अंक का शांति समर।

आज उछलते 'पेशावर' के 'मरण-कांड' के बलिदानी,
आज मचलती 'बयालीस' के बलि वीरों की पेशानी।
आज 'बारडोली' और' 'दांडी कूच' नया दिन है लाया,
बलिदानी वीरों की स्मृति के वंदन का अवसर आया।

आज 'चंद्रशेखर', 'बिस्मिल' और 'भगतसिंह' के गान जगे,
'रासबिहारी' 'अमीचंद', 'अशफाक' शेर के प्राण जगे।
करते गान स्वतंत्र देश का 'यतींद्र' के मान जगे,
'मदन ढींगरा', 'ऊधमसिंह' के आजादी के प्राण पगे।
'खुदीराम', राजिंद्र लाहिड़ी का मन गुपचुप मुसकाया,
बलिदानी वीरों की स्मृति के, चिंतन का अवसर आया।
'अलीपुर' 'चौरी-चौरा' और 'बंग-भंग' की घटनाएँ,

'कामागाटामारु' और 'आप्टीचिमूर' की ललनाएँ।
अब भी जीवित हैं भारत के कण-कण में इठलाती,
'बलिया' के गौरव की गाथा हर्ष-विनंदित हैं गाती।
'तात्या टोपे', 'वीर कुँवर' का खून अरे है रंग लाया,
बलिदानी वीरों की स्मृति के, अरचन का अवसर आया।

—आचार्य क्षेमचंद्र सुमन

□

सरफरोशी की तमन्ना

(७ अगस्त, शहीद दिवस)

सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है जोर कितना बाजु-ए-कातिल में है॥
ऐ शहीदो! मुल्को-मिल्लत, मैं तेरे ऊपर निसार,
अब तेरी हिम्मत की चर्चा गैर की महफिल में है।
आज फिर तकतल में कातिल कह रहा है बार-बार,
क्या तमन्ना-ए-शहादत भी किसी के दिल में है।
अब न पहले बुलबुले हैं औ' न अरमानों की भीड़,
सिर्फ मर मिटने की हसरत इस दिले-बिस्मिल में है।
रहबरे-राहे-मुहब्बत रह न जाना राह में,
लज्जते-सहराने-वर्दी दूरि-ए-मंजिल में है।
वक्त आने दे बता देंगे तुझे ऐ आसमाँ!
हम अभी से क्या बताएँ क्या हमारे दिल में है।
तू सताने को सता ले, पर तू इतना देख ले,
कोई भी हसरतजदा मुझ सा इस अमर शहीद महफिल में है॥

— रामप्रसाद 'बिस्मिल'

देश-हित मरना पड़े

(१ अगस्त, शहीद दिवस)

यदि देश-हित मरना पड़े मुझको सहस्त्रों बार भी,
तो भी न मैं इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊँ कभी॥
हे ईश, भारतवर्ष में शत बार मेरा जन्म हो,
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो।
मरते 'बिस्मिल', रोशन, लाहिड़ी, अशफाक अत्याचार से,
होंगे पैदा सैकड़ों उनके रुधिर की धार से।
उनके प्रबल उद्योग से उद्धार होगा देश का,
तब नाश होगा सर्वदा दु:ख-शोक के लवलेश का॥

— रामप्रसाद 'बिस्मिल'

वीरों की फसल यहाँ होती

झुक गया वीरता के आगे,
शृंगार सहज पथ का राही।
वीरों की फसल यहाँ होती,
रहता नित आँगन हरा-भरा।
है कौन इसे कहता उजाड़?
मरुधरा रही उर्वरा धरा॥

इसने उपजाया सुकवि चंद,
रासो के विद्युत् भरे छंद।
स्वच्छंद छंद उन कवियों की,
कब रही लेखनी बंद।
मीरा मतवाली की ममता,
कविता बन बहती है कलकल।
गिरधर के रंग में जब रँगती,
गीला करती भू का आँचल।

दादू की दर्द भरी वाणी,
हो जाती दिल के आर-पार।
अब भी घर-घर और गली गली,
वैरागी का बजता सितार।

कवियों की फसल यहाँ होती,
है काव्यमयी वह वसुंधरा।
है कौन इसे कहता उजाड़?
मरुधरा रही उर्वरा धरा॥

सौरभमय सघन द्रुमों का था,
इस मरु में नाम निशान नहीं।
माना रेतीले जंगल में,
पत्तों का मर्मर गान नहीं।

पर किसे चाहिए छाँह,
पाना किसको आराम?
फुरसत कब थी उन वीरों को,
लेते जो क्षण विश्राम?

आए थे लेकर एक काम,
दिन-रात, दोपहर सुबह-शाम।
कहते-कहते चल बसे वीर,
गर्वित हो फूली वसुंधरा।

है कौन इसे कहता उजाड़?
मरुधरा रही उर्वरा धरा।

—डॉ. शंभूनाथ सिंह

□

स्वर्ग-सा यह देश मेरा

(15 अगस्त)

छल नहीं सकता अँधेरा
ज्योति का हर द्वार डेरा,
जागरण आराधना है
अब यहाँ सोना मना है।

यह धरा है उर्वरा है
प्रकृति ने इसको वरा है,
हिमशिखर गौरव ध्वजाएँ
रत्न से सागर भरा है।

त्याग ने आनंद टेरा
प्यार में सुख का बसेरा,
कर्म कर्मठ साधना है
अब यहाँ सोना मना है।

प्रकृति शुभ संवाद बोले
चेतना नव रंग घोले,
शांति अविकल बाट जोहे
योजना परतें टटोले।

भोर ने फिर तमस घेरा
सूर्य नित लाए सवेरा,
प्रगति की संभावना है
अब यहाँ सोना मना है।

एक संस्कृति का पसारा
एक सी है भाव-धारा,
एक आस्था, एक निष्ठा
सत्य का इतिहास सारा।

एक स्वर हो राष्ट्र बोले
स्वर्ग-सा यह देश मेरा,
लोक-मंगल कामना है
अब यहाँ सोना मना है॥

—इंदिरा मोहन

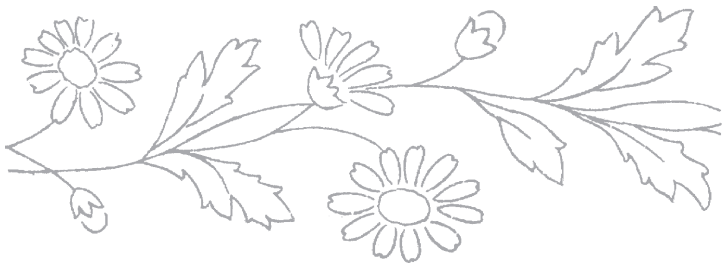

हिमालय
(15 अगस्त)

मेरे नगपति, मेरे विशाल!

साकार, दिव्य, गौरव विराट्, पौरुष के पुंजीभूत ज्वाल,
मेरी जननी के हिम किरीट, मेरे भारत के दिव्य भाल।
मेरे नगपति, मेरे विशाल!

युग-युग अजेय, निर्बंध, मुक्त, युग-युग गर्वोन्नत, नित महान्,
निस्सीम व्योम में तान रहा, युग से किस महिमा का वितान?
कैसी अखंड या चिर-समाधि? यतिवर, कैसा यह अमर ध्यान?
तू महाशून्य में खोज रहा, किस जटिल समस्या का निदान?
उलझन का कैसा विषम जाल?
मेरे नगपति, मेरे विशाल!

ओ, मौन तपस्या लीन यती, पल भर तो कर ले दृगोन्मेष,
रे ज्वालाओं से दग्ध, विकल, है तड़प रहा पग-पग स्वदेश।
सुखसिंधु, पंचनद, ब्रह्मपुत्र, गंगा-यमुना की अमिय धार,
जिस पुण्यभूमि की ओर बही, तेरी विगलित करुणा उदार,

जिसके द्वारों पर खड़ा क्रांत सीमापति! तूने की पुकार,
पददलित इसे करना पीछे, पहले ले मेरा सिर उतार।
उस पुण्यभूमि पर आज तपी रे, आन पड़ा संकट कराल,
व्याकुल तेरे सुत तड़प रहे, डस रहे चतुर्दिक् विविध व्याल।
मेरे नगपति, मेरे विशाल!

कितनी मणियाँ लुट गईं, मिटा कितना मेरा वैभव अशेष,
तू ध्यानमग्न ही रहा, इधर वीरान हुआ प्यारा स्वदेश।
किन द्रौपदियों के बाल खुले, किन-किन कलियों का अंत हुआ?
कह, हृदय खोल चित्तौड़! कितने दिन ज्वाल वसंत हुआ?

पूछो सिकता कण से हिमपति! तेरा वह राजस्थान कहाँ?
वन-वन स्वतंत्रता दीप लिये फिरनेवाला बलवान कहाँ?
पैरों पर ही है पड़ी हुई मिथिला भिखारिणी सुकुमारी,
तू पूछ कहाँ इसने खोईं अपनी अनंत निधियाँ सारी?

री कपिलवस्तु! कह बुद्धदेव के वे मंगल उपदेश कहाँ?
तिब्बत, ईरान, जापान, चीन तक गए हुए संदेश कहाँ?
वैशाली के भग्नावशेष से पूछ, लिच्छिवी शान कहाँ?
ओ री! उदास गंडकी बता, विद्यापति कवि के गान कहाँ?

तू तरुण देश से पूछ अरे, गूँजा कैसा यह ध्वंस-राग?
अंबुधि-अंतस्तल बीच छिपी यह सुलग रही है कौन आग?
प्राची के प्रांगण बीच देख, जल रहा स्वर्ण-युग अग्नि-ज्वाल?
तू सिंहनाद कर, जाग तपी! मेरे नगपति, मेरे विशाल!

रे रोक, युधिष्ठिर को न यहाँ जाने दे उनको स्वर्ग धीर,
पर फिरा हमें गांडीव-गदा, लौटा दे अर्जुन-भीम वीर।

कह दे शंकर से आज करें, वे प्रलय-नृत्य फिर एक बार,
सारे भारत में गूँज उठे, 'हर-हर बम' का फिर मंत्रोच्चार।

ले अँगड़ाई उठ हिले धरा, कर निज विराट् स्वर में निनाद,
तू शैलराट्! हुंकार भरे, फट जाए कुहा, भागे प्रमाद।
तू मौन त्याग कर सिंहनाद, रे तपी! आज तप का न काल,
नवयुग शंखध्वनि जगा रही, तू जाग-जाग मेरे विशाल॥

—रामधारी सिंह 'दिनकर'

□

स्वतंत्रता दिवस
(15 अगस्त)

स्वतंत्रता की सुखद जयंती मिलकर चलो मनाएँ हम।
इसको सदा सुरक्षित रखने की सौगंध उठाएँ हम॥
वंदे मातरम्! वंदे मातरम्!

याद करें उनको जो आजादी के हित बलिदान हुए।
छोड़ दिया घरबार भटकते फिरे सुबह से शाम हुए।
उन महान् वीरों को मन से सादर शीश झुकाएँ हम।
इसको सदा सुरक्षित रखने की सौगंध उठाएँ हम॥
वंदे मातरम्! वंदे मातरम्!

जीते जी जो हार न मानी वह झाँसी की रानी थी।
वीर शहीदों के गुण गाकर जनता बनी दिवानी थी।
आज उन्हीं के पद-पंकज की माथे धूल चढ़ाएँ हम।
इसको सदा सुरक्षित रखने की सौगंध उठाएँ हम॥
वंदे मातरम्! वंदे मातरम्!

भगत सिंह, सुखदेव, राजगुरु, फाँसी पर क्यों झूल गए?
क्यों आजाद चंद्रशेखर परिवार कष्ट को भूल गए?
बोले राम प्रसाद शत्रुओं की ताकत आजमाएँ हम॥
इसको सदा सुरक्षित रखने की सौगंध उठाएँ हम॥
वंदे मातरम्! वंदे मातरम्!

तिलक, गोखले, लाल, पाल ने जीवन माँ पर वार दिए।
नेहरू, राजेंद्र, पटेल ने पग-पग पर संषर्घ किए।
सत्य अहिंसा के राही गांधीजी के गुण गाएँ हम।
इसको सदा सुरक्षित रखने की सौगंध उठाएँ हम॥
वंदे मातरम्! वंदे मातरम्!

नेता वीर सुभाष बोस ने ईंट से ईंट बजा डाली।
लाल किले पर विजय पताका फहराने की कसम खा ली।
उन अनजान सपूतों को श्रद्धा के सुमन चढ़ाएँ हम।
इसको सदा सुरक्षित रखने की सौंगंध उठाएँ हम॥
वंदे मातरम्! वंदे मातरम्!

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

जाग, तुझको दूर जाना
(15 अगस्त)

चिर सजग, आँखें उनींदी, आज कैसा व्यस्त बाना।
जाग, तुझको दूर जाना।

अचल हिमगिरि के हृदय में आज चाहे कंप हो ले,
या प्रलय के आँसुओं में मौन अलसित व्योम रो ले।
आज पी आलोक को झेले तिमिर की घोर छाया,
जाग यों विद्युत्शिखाओं में निठुर तूफान बोले।

पर तुझे है नाश-पथ पर चिह्न अपने छोड़ जाना।
जाग, तुझको दूर जाना।

बाँध लेंगे क्या तुझे यह मोम के बंधन सजीले,
पंथ की बाधा बनेंगे तितलियों के पर रँगीले?
विश्व का क्रंदन भुला देगी मधुप की मधुर गुनगुन,
क्या डुबो देंगे तुझे ये फूल के दल ओस गीले?

तू न अपनी छाँह को अपने लिए कारा बनाना!
जाग, तुझको दूर जाना।

वज्र का उर एक छोटे अश्रुकण में धो गलाया,
दे किसे जीवन-सुधा दो घूँट मदिरा माँग लाया?
सो गई आँधी, मलय की बात का उपधान लेकर,
विश्व का अभिशाप क्या चिर नींद बनकर पास आया?

अमरता-सुत चाहता क्यों मृत्यु को उर में बसाना।
जाग, तुझको दूर जाना।

—महादेवी वर्मा

□

आत्म-चिंतन

(15 अगस्त)

स्वतंत्रता की स्वर्ण-जयंती पर,
आओ हम चिंतन करें
क्या है खोया और क्या पाया
आओ यह मंथन करें।

क्यों गँवाईं जानें इतनी
जलियाँवाला बाग में,
क्यों बहाया खून अपना,
लाला लाजपतराय ने?

क्यों चूमा फाँसी का फंदा,
भगत सिंह, सुखदेव ने,
क्यों चली जालिम वो गोली,
गांधी का सीना चीरने?

क्यों लगाया नारा हमने
'जयहिंद' के घोष का?
क्यों है तोड़ा सपना हमने
वीर सुभाष बोस का?

वो थे दीवाने जो बाँधें
सिर पर अपने ही कफन,
कौम की गैरत की खातिर
हो गए शहीदे-वतन!

संतरी बन गए सभी
जो थे लुटेरे घात में,
छल-कपट, धोखाधड़ी
इनकी हर एक बात में।

भ्रष्ट फसलें उग रहीं
अब आज हर एक खेत में,
देशभक्ति दब गई
कुछ खाक में, कुछ रेत में।

स्वतंत्रता की स्वर्ण-जयंती पर
आओ हम चिंतन करें,
क्या है खोया क्या है पाया
आओ यह मंथन करें!

—वीरेंद्र मेहता

□

बढ़े चलो
(15 अगस्त)

चले चलो, बढ़े चलो, बढ़े चलो, चले चलो।
प्रचंड सूर्य-ताप से, न तुम जलो, न तुम गलो॥

हृदय से तुम निकाल दो, अगर हो पस्त हिम्मती,
नहीं है खेल मात्र ये, ये जिंदगी है जिंदगी।
न रक्त है, न स्वेद है, न हर्ष है, न खेद है,
ये जिंदगी अभेद है, यही तो एक भेद है।
समझ के सब चले चलो, कदम-कदम बढ़े चलो॥
पहाड़ से चली नदी, रुकी नहीं कहीं जरा,
गई जिधर उधर किया जमीन को हरा-भरा।
चली समान रूप से, जमीन का ख्याल कर,
मगन रही निनाद में, जमीन पर, पहाड़ पर।
उसी तरह चले चलो, उसी तरह बढ़े चलो॥

जलाओ दिल के दाह से बुझे दिलों के दीप को,
जो दूर हैं उन्हें भी खींच लो जरा समीप को।
सहो जमीन की तरह, डरो न आसमान से,
जलो तो आन-बान से, बुझो तो एक शान से।
अखंड 'दीप' से जलो, सदाबहार-से खिलो॥

बिना पिए रहे नशा, न चढ़के वो उतर सके,
जुनून वह सवार हो कि जो न उम्र भर रुके।
वो ही काम तुम करो, जो दूसरा न कर सके,
कोई तुम्हारी शान से, न जी सके, न मर सके।
समीर-से चले चलो, समीर-से बहे चलो॥

—पद्मकांत मालवीय

□

रक्षाबंधन
(श्रावण पूर्णिमा)

रक्षाबंधन का प्रिय रूप सँवारकर।
हमें पहुँचना हर आँगन हर द्वार पर॥

रक्षा का यह सूत्र साथ ले जाएँगे।
हर हिंदू को आज बाँधकर आएँगे।
मिलकर पिछड़ों को भी आगे लाएँगे।
रूठों को भी जाकर आज मनाएँगे॥

चले यही संकल्प हृदय में धार कर।
हमें पहुँचना हर आँगन हर द्वार पर॥

हिंदू संस्कृति पतित-पावनी गंगा है।
एक सुखद जल यद्यपि अमित तरंगा है।
अनगिन नाले नदियाँ चाहे मिल जाएँ—
अमृत सलिला गंगा फिर भी गंगा है॥

मन चंगा होता तनरूप पखारकर।
हमें पहुँचना हर आँगन हर द्वार पर॥

युग-युग से यह पर्व एकता करता है।
ऊँच-नीच के भेदभाव को हरता है॥
मंत्र-संगठन का सिखलाता सहज ही—
हर हिंदू में भाव प्रेम का भरता है॥

चलो बंधुओ! समरसता की राह पर।
हमें पहुँचना हर आँगन हर द्वार पर॥

ये राखी के सूत्र स्नेह के हैं बंधन।
निर्मल मन हर माथे का रोली चंदन।
सुदृढ़ बने हिंदू-हिंदू का गठबंधन।
जगत् करे फिर भारत माता का वंदन॥

सतत बढ़ें सत्पथ पर यही विचार कर।
हमें पहुँचना हर आँगन हर द्वार पर॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

बहन बाँध दे रक्षाबंधन

(श्रावण पूर्णिमा)

बहन बाँध दे रक्षाबंधन, मुझे समर में जाना है।
अब के घन-गर्जन में रण का, भीषण छिड़ा तराना है।
दे आशीष, जननि के चरणों में यह शीश चढ़ाना है।
बहन, पोंछ ले अश्रु, गुलामी का यदि दुःख मिटाना है॥

अंतिम बार बाँध ले राखी,
कर ले प्यार आखिरी बार।
मुझको जालिम ने फाँसी की,
डोरी कर रखी तैयार॥

रक्षा, रक्षा कायरता से, मर मिटने का दे वरदान।
हृदय, रक्त से टीका कर दे, दे मस्तक पर लाल निशान।
वह जीवन का स्रोत आज कर मेरे मानस में संचार।
अचल रहूँ मैं देख समर में, रिपु की बिजली-सी तलवार॥

अपना शीश कटा जननी की,
जय का मार्ग बनाना है।
बहन, बाँध दे रक्षाबंधन,
मुझे समर में जाना है॥

जिसने लाखों ललनाओं के पोंछ दिए सिर के सिंदूर।
गड़ा रहा कितनी कुटियाओं के दीपों पर आँखें क्रूर।
वज्र गिराकर कितने कोमल हृदय कर दिए चकनाचूर।
उस पापी की प्यास बुझाने, बहन जा रहे लाखों शूर॥

मृत्यु-विटप की शाखा पर मैं,
डाल हिंडोला झूलूँगा।
दो पींगों में अमर लोक की,
अंतिम सीढ़ी चूमूँगा॥

बहन, शीश पर मेरे रख दे स्नेह-सहित अपना शुभ हाथ।
कटने के पहले न झुके यह ऊँचा रहे गर्व के साथ।
उस हत्यारे ने कर डाला, अपना सारा देश अनाथ।
आश्रयहीन हुई यदि तू भी, ऊँचा होगा तेरा माथ॥

दीन भिखारिन बनकर तू भी,
गली-गली फेरी देना—
'उठो बंधुओ, विजय-वधू को
वरो, तभी निद्रा लेना'॥

आज सभी देते हैं अपनी बहनों को अमूल्य उपहार।
मेरे पास रखा ही क्या है आँखों के आँसू दो-चार।
ला दो-चार गिरा दूँ, आगे अपना आँचल विमल पसार।
तू कहती है—'ये मणियाँ हैं, इनपर न्योछावर संसार'॥

बहन बढ़ा दे चरण-कमल मैं,
अंतिम बार उन्हें लूँ चूम।
तेरे शुचि स्वर्गीय स्नेह के,
अमर नशे में लूँ अब झूम॥

—हरिकृष्ण प्रेमी

□

ज्ञान गंगा बही

(श्रीकृष्ण जन्माष्टमी)

ज्ञान गंगा वही, हम नहाए नहीं,
तेरी आराधना कृष्ण कैसे करें?

चोरी माखन की करके सिखाया था क्या?
मटकियाँ फोड़ नाटक दिखाया था क्या?
ब्रज का माखन न जाए किसी और को—
पाठ मोहन मदन ने पढ़ाया था क्या?

संगठन बालकों का खड़ा कर दिया,
मिल के अन्याय का सामना हम करें॥ ज्ञान गंगा···

तान वंशी की वन में बजाते थे तुम।
गोपियों को घरों से बुलाते थे तुम।
एक होकर बढ़ें, दुष्टता से भिड़ें—
नित्य अभ्यास उनको कराते थे तुम॥

चीर हरकर सजगता सिखाई उन्हें,
साहसी हों, न हम मुश्किलों से डरें॥ ज्ञान गंगा···

धर्म का मार्ग पग-पग दिखाया प्रभो!
ज्ञान गीता का जग को सिखाया प्रभो!
आत्मा है अजर, आत्मा है अमर—
मृत्यु का भय मनों से हटाया प्रभो।

देह अभिमान तज, आत्मा को ही भज,
हम अकर्ता बनें, कर्म फिर भी करें॥ ज्ञान गंगा···

धर्म-ध्वज को सँभाला था संग्राम में।
पापियों को मिटाया था घनश्याम ने।
योग वेदांत दर्शन दिया विश्व को—
कर्म निष्काम पथ दे दिया श्याम ने।

हर चरण आपका, आचरण आपका,
ज्योति दर्शन करें, अनुसरण हम करें॥ ज्ञान गंगा···

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

शिक्षक दिवस
(5 सितंबर)

दिशा-दिशा में अंधता, मान शून्य दिक् काल।
तुझे जलानी है यहाँ फिर से नई मिशाल॥

अब न कहीं अँधियार हो अब न कहीं दु:ख भार।
धरती से नभ तक जलें, सुख के दीप हजार॥

सुख-दु:ख बाँटे या सुमन यही जगत् की रीत।
काँटे तुम दु:ख बीनकर, बाँट सुमन सी प्रीत॥

तुमने तो भर-भर दिए, शब्द अर्थ बहुरूप।
निपट अकिंचन मन कहाँ, समझा रूप अरूप॥

तोड़ पुराने जर्जरित, मर्यादा के फंद।
अगर सजाने हैं तुझे, नए भाव नव छंद॥

पहले जब खुद दीप सा, सह झंझा के घात।
फिर कहना उस भोर से, उजियारी की बात॥

पल-पल दीपक सा जला, अँधियारी के गाँव।
तेरे ही पद-चिह्न पर, भोर चली धर पाँव॥

— डॉ. देवेंद्र आर्य

□

चेतावनी
(5 सितंबर)

जगो कि तुम हजार साल सो चुके,
जगो कि तुम हजार साल खो चुके,
जहान बस सजग-सचेत आज तो
तुम्हीं रहो पड़े हुए न बेखबर!
उठो चुनौतियाँ मिलीं जवाब दो,
कदीम कौम-नस्ल का हिसाब दो,
उठो स्वराज्य के लिए खिराज दो,
उठो स्वदेश के लिए कसो कमर!
बढ़ो गनीम सामने खड़ा हुआ,
बढ़ो निशान जंग का गढ़ा हुआ,
सुयश मिला कभी नहीं पड़ा हुआ,
मिटो, मगर लगे न दाग देश पर।

—हरिवंशराय 'बच्चन'

□

आह्वान

(8 सितंबर, साक्षरता दिवस)

एक बार पढ़ने तो आओ।
हर सपना साकार बनेगा॥

यह मत समझो, बड़ी उम्र में
पढ़ पाना ज्यादा भारी है।
सच तो यह है, उम्र तुम्हारी
समझाने में सहकारी है॥

एक बार आगे तो आओ।
पथ तो अपने आप बनेगा।
एक बार···

यह मत समझो पढ़ना-लिखना,
ठेका है बस धनवालों का।
अच्छी तरह पहनना-खाना,
हक है धरती के लालों का॥

एक बार लेने तो आओ।
हक भी तुम्हें जरूर मिलेगा।
एक बार···

तुम्हें नहीं मालूम, तुम्हारी
कैसे होगी, सही भलाई?
उल्टा ही उपचार किया है,
बीमारी तो आप बढ़ाई॥

एक बार केंद्रों में आओ।
भले-बुरे का पता चलेगा।
एक बार···

पढ़ने का मतलब क्या तुमने
सिर्फ नौकरी को ही जाना।
कला-शिल्प-मजदूरी में भी,
शिक्षा फल देती है नाना॥

एक बार मन में तो धारो।
उन्नति का हर द्वार खुलेगा।
एक बार···

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

आओ पढ़ लें घड़ी-दो घड़ी

(8 सितंबर, साक्षरता दिवस)

जिंदगी यूँ गँवाई बड़ी।
आओ पढ़ लें घड़ी-दो घड़ी॥

हाय बचपन के दिन खो गए।
आज भी सुस्त हो सो गए।
मोल समझे समय का न हम—
बीज काँटों के खुद बो गए।
आदतें सब गलत ही पड़ीं।
आओ पढ़ लें घड़ी-दो घड़ी॥

थी गरीबी, नहीं पढ़ सके।
हम न आगे कभी बढ़ सके।
यों कुरीति ने जकड़ा हमें—
मुश्किलों से नहीं लड़ सके।
अपनी कमजोरियाँ थीं बड़ी।
आओ पढ़ लें घड़ी-दो घड़ी॥

दब गए कर्ज के भार से।
हम पिटे फर्ज की मार से।

दूर अपनों से होते गए।
जैसे पत्ते झरे डाल से।
हाय, मजबूरियाँ आ पड़ीं।
आओ पढ़ लें घड़ी-दो घड़ी॥

ज्ञान बिन सब नशे कर लिये।
दु:ख हजारों यहीं भर लिये।
मौत असली न आई अभी—
पर हजारों दफा मर लिये।

काम आई न कोई जड़ी।
आओ पढ़ लें घड़ी-दो घड़ी॥
जिंदगी यूँ गँवाई बड़ी।
आओ पढ़ लें घड़ी-दो घड़ी॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

कव्वाली

(8 सितंबर, साक्षरता दिवस)

हम अपने देश को, शिक्षित बनाके छोड़ेंगे।
दिलों में ज्ञान का, दीपक जलाके छोड़ेंगे॥
हम अपने देश को···

हर एक अनपढ़ को, घर से बुलाके लाएँगे।
सभी को प्यार से, पुस्तक पढ़ाके छोड़ेंगे॥
हम अपने देश को···

न छोटा-बड़ा, निर्धन-अछूत हो कोई।
दिलों में प्रेम की, गंगा बहाके छोड़ेंगे॥
हम अपने देश को···

इस अपने देश में, ढेरो कुरीतियाँ फैलीं।
करेंगे दूर हम, जड़ से मिटाके छोड़ेंगे॥
हम अपने देश को···

रहेगा अनपढ़ ना, बाकी शहर या गाँवों में।
हर एक प्रौढ़ को, पढ़ना सिखाके छोड़ेंगे॥
हम अपने देश को···

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

हिंदी दिवस
(14 सितंबर)

हिंदी जन की सुरसरी हिंदी भव का त्राण।
जन मानस को सींचती, तन-मन देकर प्राण॥

हिंदी जन अवधारणा, नए भाव संकल्प।
नई इमारत के लिए, सबसे मधुर विकल्प॥

हिंदी सूर, कबीर की तुलसी की मुसकान।
मीरा के घनश्याम भी रहिमन और रसखान॥

हिंदी संस्कृति सभ्यता हिंदी रीति-रिवाज।
त्योहारों में गूँजती जन-जन की आवाज॥

हिंदी सद्गुरु के शबद, गुरु नामक का ज्ञान।
गुरु गोविंद गुरु तेग का, तन-मन जीवन दान॥

हिंदी शुद्ध किसान की बाला का सिंदूर।
मधुर मनोहर बोल में नैनन जल भरपूर॥

हिंदी श्रम की वंदना, खलिहानों की भोर।
खेत-खेत में चहकती, बन चिड़ियों का शोर॥

—डॉ. देवेंद्र आर्य

□

महात्मा गांधी
(2 अक्तूबर)

चल पड़े जिधर दो डग मग में
चल पड़े कोटि पग उसी ओर,
पड़ गई जिधर भी एक दृष्टि
उठ गए कोटि दृग उसी ओर।

जिसके सिर पर निज धरा हाथ
उसके सिर-रक्षक कोटि हाथ,
जिस पर निज मस्तक झुका दिया
झुक गए उसी पर कोटि माथ।

हे कोटि चरण! हे कोटि बाहु!
हे कोटि रूप, हे कोटि नाम,
तुम एक मूर्ति प्रतिरूप कोटि
हे कोटि मूर्ति! तुमको प्रणाम!

युग बढ़ा तुम्हारी हँसी देख
युग हटा तुम्हारी भृकुटि देख,
तुम अचल मेखला बन भू की
खींचते काल पर अमिट रेख।

तुम बोल उठे, युग बोल उठा
तुम मौन हुए युग मौन हुआ,
कुछ कर्म तुम्हारे संचित कर
युग कर्म जगा, युग धर्म तना।

युग परिवर्तक, युग संस्थापक,
युग संचालक, हे युगाधार!
युग निर्माता, युग मूर्ति तुम्हें
युग-युग तक युग का नमस्कार।

तुम युग-युग की रूढ़ियाँ तोड़
रचते रहते नित नई सृष्टि,
उठतीं नवजीवन की नींवें,
ले नवचेतन की दिव्य दृष्टि।

धर्माडंबर के खँडहर पर
कर पद प्रहार, कर धरा ध्वस्त,
मानवता का पावन मंदिर
निर्माण कर रहे सृजन व्यस्त।

बढ़ते ही जाते दिग्विजयी
गढ़ते तुम अपना रामराज,
आत्माहुति के मणि-माणिक से
मढ़ते जननी का स्वर्ण ताज।

तुम कालचक्र के रक्त सने
दशनों को कर से पकड़ सुदृढ़,
मानव को दानव के मुँह से
ला रहे खींच बाहर बढ़-बढ़।

पिसती कराहती जगती के
प्राणों में भरते अभय दान,
अधमरे देखते हैं तुमको
किसने आकर यह किया त्राण।

दृढ़ चरण, सुदृढ़ कर संपुट से
तुम कालचक्र की वात रोक,
नित महाकाल की छाती पर
लिखते करुणा के पुण्य श्लोक।

कँपता असत्य, कँपती मिथ्या
बर्बरता कँपती है थर-थर,
कँपते सिंहासन राजमुकुट
कँपते, खिसके आते भू पर।
हैं अस्त्र-शस्त्र कुंठित-लुंठित
सेनाएँ करतीं गृह प्रयाण,
रणभेरी तेरी बजती है
उड़ता है तेरा ध्वज निशान।
हे युगद्रष्टा, हे युगस्त्रष्टा, पढ़ते कैसा यह मोक्ष मंत्र।
इस राजतंत्र के खँडहर में, उगता अभिनव भारत स्वतंत्र॥

—सोहनलाल द्विवेदी

कैसी थी यह विजय-गर्जना

(2 अक्तूबर, गांधी जयंती)

जो बल था उनकी वाणी में है बल वह नहीं हथौड़ों में,
बड़े-बड़ों में ढूँढ़ा, पर ना गांधी मिला करोड़ों में।
वह धोती, वह घड़ी, लकुटिया
चुनी हड्डियों का ढाँचा
जिसमें ढली आत्मा यह
वह था विशेष विधिवत् साँचा
कम बोले औ' करें अधिक
जो कम बैठे औ' चले अधिक
कम ले जो विश्राम-कि
जिसके दिन का सूरज नहीं ढले
ऐसा मनुज इकाई में है—कहाँ खोजते क्रोड़ों में?
बाल न बाँका हुआ जरा भी
चालीस कोटि आबादी का
आजादी को घेर कर
लाया धागा खादी का
भौतिक बल के बलवानों ने
निर्बल का बल तब परखा

जब अबाध गति से घर-घर में
घूमा गांधीजी का चरखा
धार छिपी तलवारों की थी, उन तकली के तोड़ों में।

— भरत व्यास

□

लाल बहादुर शास्त्री
(2 अक्तूबर)

नाटा तन था लेकिन मन बलवान था।
लाल बहादुर सचमुच बहुत महान् था॥

बचपन से ही माँ का आज्ञाकारी था।
सच्चा लाल कहाने का अधिकारी था॥

स्वाभिमान, साहस था उनकी नस-नस में।
लोभ-मोह ना कर पाए अपने वश में॥

निर्धनता भी प्रगति पथ कब रोक सकी।
लाल बहादुर की दृढ़ता ना टोक सकी॥

सादा जीवन उच्च विचारों की सच्ची तसवीर था।
पूर्ण अहिंसक अलबेला लेकिन निर्भय वीर था॥

मात्र अठारह मास कमान सँभाली थी।
भारत माता की अद्‌भुत रखवाली की॥

हरित क्रांति कर खूब अनाज उगाया था।
जय जवान जय जय किसान बुलवाया था॥

पाकिस्तानी सेना का भ्रम दूर किया।
उसका सपना शास्त्रीजी ने चूर किया॥

गांधीजी का वह पक्का अनुयायी था।
भारत माँ का सच्चा शूर सिपाही था॥

दो अक्तूबर को दोनों का मान करें।
गांधी, लालबहादुर का गुणगान करें॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

मर्यादा पुरुषोत्तम राम

(विजयादशमी पर्व)

मर्यादा पुरुषोत्तम राम,
राजाओं में उत्तम राम।
दुःख भंजक, सुख के स्वामी,
स्नेह-शील-सेवा के धाम।

धीरज जिनका मित्र बना,
सदा विवेकी चित्र बना।
सदाचार-सद्‌भाव-सुमंगल,
श्रद्धा-भक्ति चरित्र बना।

विश्वमित्र के शिष्य हुए,
और दुष्टों से जीता संग्राम।
शुभ-संकल्प-व्रती हुए,
सिर्फ-जानकी-पति हुए।

जिनके दिव्य-तेज के आगे,
हत लंकाधिपति हुए।
जीवन के पुरुषार्थ-योग में,
कहीं नहीं मन का विश्राम।

लखन-भरत-से भ्राता हों,
कौशल्या-सी माता हो।

दशरथ-जैसे पिता मिलें—
जो नीति-धर्म के ज्ञाता हों।
ऐसे संबंधों को जनता।
करती है शत-शत प्रणाम।

—विष्णु ज. माहोलकर

□

दशहरा

(आश्विन शुक्ल दशमी)

आओ मनाएँ दशहरा,
असत्य पर लगे सत्य का पहरा!
राम-सा बनाएँ चरित्र अपना,
साकार करें बापू का सपना!
चलें सत्य न्याय की दिशा,
छँटे अज्ञान की घोर निशा!
भर के भारत को सजाएँ,
ज्ञान की गंगा हम बहाएँ!

पशुता कटुता की हो हार,
फैले भाईचारा और प्यार!
कलह का बीज न बोएँ,
अपने-अपनों में न खोएँ!

सुख-दुःख मिलकर बाँटे,
कुरीतियों की बेड़ियाँ काटें!
अन्याय की लंका को फिर से जलाएँ,
आओ हम मिलकर दशहरा मनाएँ!

— रंजन कुमार शर्मा 'रंजन'

वाल्मीकि जयंती
(शरद पूर्णिमा)

राम का नाम तो रोज रटते रहे।
राम के काम से किंतु कटते रहे।
राम वनवासियों को जगाते रहे।
राष्ट्रधारा में सबको मिलाते रहे।
राम ने हर कदम प्यार जिनसे किया।
आपने भी कभी प्यार उनसे किया?
सभ्यता के दिखावे तो करते रहे।
किंतु अधिकार औरों का हरते रहे॥ राम का···

याद है राम शबरी के घर आ गए।
प्रेम से बेर झूठे भी वो खा गए।
जाति कोई कभी भी न अस्पृश्य है।
आचरण राम का स्पष्ट है, दृश्य है।
राम जिनको गले से लगाते रहे।
क्यों घृणा तुम वहीं पर उगाते रहे? राम का···

राम का काव्य जिसने जगत् को दिया।
स्वयं भगवान् जिसने भगत को दिया।
वाल्मीकि को क्यों भूल हम सब गए।

छोड़ सद्ज्ञान क्यों ढोंग में रम गए?
हम विदेशी जनों को मिलाते रहे।
अंग अपने परंतु कटाते रहे॥ राम का···

आ गया है समय आज, जागो, उठो।
यह घृणा भाव भीतर से त्यागो, उठो।
मेल की बेल फूले-फले हर डगर।
फूट का कुंभ फूटे इसी मोड़ पर।
हिंदु हर बात पर यूँ न बँटते रहें।
सत्य-पथ पर बढ़ें, ना भटकते रहें॥ राम का···

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

आदिकवि वाल्मीकि

(शरद पूर्णिमा)

प्रभु के प्रताप पंगु पर्वत लाँघ जाय,
उनके लिए न मुश्किल कोई काम है।
ईश्वर की ही दृष्टि से दिनकर दिन करे,
उसकी ही कृपा से ढलती ये शाम है॥

साधारण आदमी से देवऋषि बन गए,
उसी दयावान की दया का परिणाम है।
रामायण लिखकर बड़ा उपकार किया,
आदिकवि वाल्मीकि आपको प्रणाम है॥

— रामचरण सिंह साथी

□

गरीबी से संग्राम

(17 अक्तूबर, गरीबी उन्मूलन दिवस)

चलो साथियो! हम सेवा के काम करें।
आज गरीबी से जमकर संग्राम करें॥

यह न समझना हमें गरीबी थोड़ी दूर हटानी है।
अपने आँगन से बुहारकर नहीं पराए लानी है।
एक शहर से नहीं उठाकर दूजे गाँव बसानी है।
करें इरादा भारत भर से इसकी जड़ें मिटानी हैं।

ठोस करें हम काम, न केवल नाम करें।
आज गरीबी से जमकर संग्राम करें॥

यह भारी अभिशाप कसकती पीड़ा हृदय दुखाती है।
दीमक बनकर मानवता को भीतर-भीतर खाती है।
जिसको लेती पकड़ पीढ़ियों तक भी उसे सताती है।
इच्छा के अंबार लगाती डगर-डगर तरसाती है।

आओ इसका मिलकर काम तमाम करें।
आज गरीबी से जमकर संग्राम करें॥

आलस इसका पिता और माता है इसकी बेकारी।
पालन-पोषण करती इसका सदा अशिक्षा की नारी।
साकी प्याला और मधुशाला सखी-सहेली लाचारी।
चारों मोहरों पर लोहा लेने की कर लो तैयारी।

बस्ती-बस्ती गली-गली में ऐलान करें।
आज गरीबी से जमकर संग्राम करें॥

हथियारों से नहीं गरीबी, हारेगी औजारों से।
नहीं बनेगी बात भाषणों, लेखों या अखबारों से।
मेहनत ही आधार मिला, कटती मंजिल कब नारों से।
सारे जोर लगाएँ मिलकर, बस्ती शहर बाजारों से।

हाथ करोड़ों साथ निरंतर काम करें।
आज गरीबी से जमकर संग्राम करें॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

ननकू कहाँ चला?

(17 अक्तूबर, गरीबी उन्मूलन दिवस)

कटि पर फटा घुटन्ना बाँधे
बाली उमर कटोरा साधे
झुनिया को काँधे पर लादे
ननकू कहाँ चला?

माई सुबह गई होटल में
बापू डूब रहा बोतल में
टूटा तवा, कनस्तर खाली
पानी नहीं उपासे नल में

जाने कब से ननकू के घर
चूल्हा नहीं जला
ननकू कहाँ चला?

दिशाहीन फुटपाथी बचपन
कूड़े में ढूँढ़ेगा जीवन
यूँ ही कभी पहुँच जाएगा
कोठे पर झुनिया का यौवन
मूक कचहरी संसद् बहरी

किससे करें गिला
ननकू कहाँ चला?

प्यासी मारी फिरें हवाएँ
इंद्रधनुष पी गए घटाएँ
पोखर की सूखी छाती में
पड़ी दरारें किसे दिखाएँ?
प्रश्न पूछता चौराहे पर
कब से लाल किला।
ननकू कहाँ चला?

—गिरिराज किशोर सक्सेना

□

क्रांतिदूत सरदार पटेल
(31 अक्तूबर)

गुजरात प्रांत में जिला है खेड़ा, गाँव करमसद सुंदर है।
गाँव-गाँव में, घर-घर में, भारत माता का मंदिर है।
इकतीस अक्तूबर, अठारह सौ पिचहत्तर की थी पुण्य घड़ी।
झूमे झबेर, जनमे वल्लभ बज रही बधाई घड़ी-घड़ी॥

अग्रज विट्ठल को, वल्लभ भाई का कदम-कदम सहयोग मिला।
पूरे पटेल परिवार बीच संस्कारों का सिलसिला चला।
गरीब घराने में जनमे, लेकिन थे धनी चरित्र-धवल।
उन्नीस सौ तेरह में लौटे थे, भारत में बैरिस्टर बन।

ठोकर मार वकालत को, वे लगे देश संचालन में।
उन्नीस सौ सोलह से सक्रिय हो, वे कूद पड़े आंदोलन में।
बारडोली, फिर असहयोग से, राष्ट्रीय संघर्ष किए।
गांधीजी के साथ-साथ, हर कदम चले सब कर्म किए॥

वे आजादी के दूत बने, हौसले बहुत मजबूत बने।
अंग्रेजी सत्ता के निमित्त, वे महाकाल यमदूत बने।
सरदार उपाधि मिली उन्हें, वे लौह-पुरुष विज्ञानी थे।
निश्चयी व्रती, वे न्यायशील, कर्मठ, सुवीर स्वाभिमानी थे।

अस्पृश्य नहीं कोई भी जन, सब हैं समान उद्घोष किया।
कर्तव्य शीलता और व्यवस्था का, जन-जन को होश दिया।
स्वाधीन खिलाड़ी बने आप, था अंग्रेजों को भगा दिया।
पाँच सौ चौंतीस रियासतों को, एक साथ था मिला दिया।

अब के भारत के निर्माता, वे अद्भुत खेल खिलाड़ी थे।
राजनीति के क्रांतिदूत, सरदार पटेल अगाड़ी थे।
आओ हम उन्हें प्रणाम करें, आओ उनका गुणगान करें।
उनकी आदर्श आचरण से, कुछ सीखें निज कल्याण करें।

— डॉ. ब्रजपाल सिंह संत

□

युग-युग जगे हमारा दीपक

(कार्तिक अमावस्या)

दीवाली का न्यारा दीपक।
हमको लगता प्यारा दीपक।
चाहे जितना अँधियारा हो,
कभी न हिम्मत हारा दीपक।
धनी-गरीब सभी का साथी,
सबका सदा सहारा दीपक।
घोर अँधेरे में बच्चों का,
हर लेता भय सारा दीपक।
परहित में ही जलता है वह,
बनता नहीं नकारा दीपक।
उतरा है धरती पर मानो
आसमान का तारा दीपक।
बिजली रहे भले ही, लेकिन
युग-युग जगे हमारा दीपक।

— भानुदत्त त्रिपाठी 'मधुरेश'

□

चलें ज्योति की ओर

(कार्तिक अमावस्या)

दीवाली की साँझ आ गई, दीप जलाओ डगर-डगर।
द्वार-देहरी, आँगन-गलियाँ हों प्रकाश से जगर-मगर।
आसमान में तारे गुमसुम, चंदा मामा दूर गए।
तुम प्रकाश के फूल खिलाओ, चाँद उगा दो कई नए।
अनगिनती कंदील टांग दो, अंधकार के मस्तक पर॥

अंधकार को जीत मनाओ, विजय-पर्व खुशहाली का।
खेल खिलौने और मिठाई लाया दिन दीवाली का।
मोमदीप फुलझड़ियों वाली, उठे ज्योति की नई लहर॥

इन दीपों के उजियाले में, निर्मल हो जन-जन का मन।
नई रोशनी मिले सभी को, कुटिया हो या राजभवन।
चलें ज्योति की ओर तिमिर से, सबके साथ चरण मिलकर।

—सीताराम गुप्त

दीपक
(दीपमाला)

छोटा दीपक हूँ तो क्या है,
मैं अपना कर्तव्य करूँगा।
जब तक तन में है चेतनता,
आस-पास का तिमिर हरूँगा।

जलना ही मेरा जीवन है,
जिसका मतलब ही उजियारा।
मेरे जगते ही भग जाता,
भयकारी काला अँधियारा॥

लोहा लेता निविड़ तिमिर से,
नहीं अकेला भी घबराता।
विजय सदा साहस की होती,
ध्येयनिष्ठ मैं कदम बढ़ाता॥

घर-घर बाती स्नेह सँजोए,
जले बिना कब तम हरता है?
तन-मन जीवन देने वाला
अपना नाम दिया धरता है॥

मेरा है कर्तव्य सभी को,
अपने जैसा दीप बनाऊँ।

अपनी लौ से उन्हें ज्योति दे,
उनकी अंत: शक्ति जगाऊँ॥
जला दीप से दीप सजाऊँ।
मैं जलते दीपों की माला।
अंधकार भागे भारत से,
मिटे अमा, हो ज्ञान उजाला॥
मैं भी दीपक तुम भी दीपक,
मिलकर निज कर्तव्य निभाएँ।
शुरू करें अपने आँगन से,
अंधकार को मार भगाएँ॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

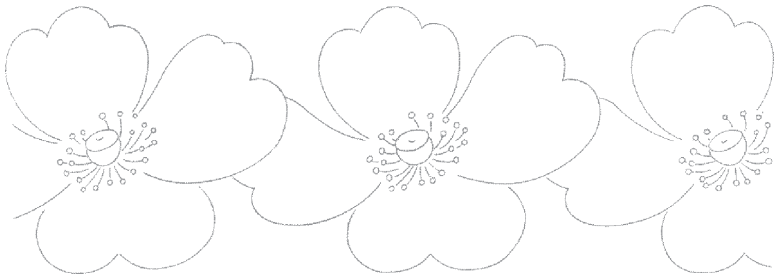

दीप-मालिका का स्वागत
(दीपमाला)

आओ, दीप-मालिके! आओ।
मेरे इस तमसावृत-उर में, पावन ज्योति जगाओ।
जिसने निविड़-निराशा-निशि से, जगा दिया जग-सोतों को।
तथा दिखाया रम्य राज-पथ; पावन-पंथ टटोतों को॥
हुआ प्रवर्तक भाग्य-वाद ही में, जो अवसर खोतों को।
वह चिर-परिचित देव-दयानंद, खोया कहाँ बताओ?
आओ, दीप-मालिके! आओ॥ 1॥

मौन हुए जिसके सुनते ही, वैदिक कोलाहल के।
यवन-मसीहे मुरे, दुरे-दंभी पौराणिक-दल के॥
हैं जिसके अनुगामी सकल-सुधारक अवनी-तल के।
यह सत्यार्थ-प्रकाश मेरा देव-दयानंद लाओ।
आओ, दीप-मालिके! आओ॥ 2॥

जन्मसिद्ध अधिकार वेद पर, सबका जिसने ठहराया।
थे पशुओं से परे पड़े उन, मानवता का पद पाया।
बिखरी आर्य-जाति को जिसने, एकसूत्र में बँधवाया।
कहाँ रहा वह देव दयानंद हा! कुछ कह समझाओ॥
आओ, दीप-मालिके! आओ॥ 3॥

जियो धर्म-हित, मरो धर्म-हित, धर्म सदा अपनाना।
गुरु, पितु-ऋण हो उऋण तथा ऋषि-ऋण भरपूर चुकाना।
समय आ पड़े तो स्वयंधर्म की वेदी पर बलि जाना।
क्या यही न, संदेश हमारे-हित हैं? क्यों, बतलाओ॥
आओ, दीप-मालिके! आओ॥ 4॥

जग-मग करती, हँसती तुम, हे दीप-मालिके! आती हो।
मेरे हित प्रतिवर्ष कोई उपहार सुखद वर लाती हो।
आज यही जो 'विजय-वैजयंती' कर में लहराती हो।
'इदन्नमम' ऋषि-चरणों में रख कहना, प्रभु अपनाओ॥
आओ, दीप-मालिके! आओ॥ 5॥

—मुंशी जगनू लाल 'मित्र'

बाल दिवस पर उद्‌बोधन
(14 नवंबर)

हिंद के सपूत हे, धीर वीर बालको।
आज तुम सँभाल लो, देश की मशाल को॥

तुम उठो कि अंधकार देश में रहे नहीं।
तुम जगो कि अत्याचार कोई भी सहे नहीं॥

चीर दो विवेक से मुश्किलों के जाल को।
आज तुम सँभाल लो, देश की मशाल को॥

इस तरह बढ़ो कि शत्रु सामना न कर सके।
देश की जमीन पर नजर न कोई धर सके॥

हो सजग विफल करो, दुश्मनों की चाल को।
आज तुम सँभाल लो, देश की मशाल को॥

पथ हो कठिन कराल वीर तुम रुको नहीं।
आँधियों को मोड़ दो, हारकर झुको नहीं॥

साहसी हो जीत लो, पर्वतों के भाल को।
आज तुम सँभाल लो, देश की मशाल को॥

यों बढ़ो कि हर तरफ हवा समान बह सके।
भेदभाव ऊँच-नीच का यहाँ न रह सके॥

एक हो जवाब दो, हर नए सवाल को।
आज तुम सँभाल लो, देश की मशाल को॥

तुम चलो समाज में नया विकास ला सकें।
जो बिछुड़ गए उन्हें भी, फिर गले लगा सकें॥

दो पुनः नई दिशा, वर्तमान काल को।
आज तुम सँभाल लो, देश की मशाल को॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

□

चाचा नेहरू

(बाल दिवस, 14 नवंबर)

बच्चों के चाचा नेहरू इनसान ही तो थे
जन-जन करोड़ों की मधुर मुसकान भी तो थे
गांधी-टोपी और कोट पहचान थी उनकी
महके हुए गुलाब-सी मुसकान थी उनकी
भारतीय जनतंत्र के प्रथम प्रधान भी तो थे॥ जन-जन···

दौलत की चकाचौंध से कोसों रहे वो दूर
जन-जन समाज जोड़ने से हो गए मशहूर
गांधी के दाएँ हाथ की कमान भी तो थे॥ जन-जन···

शांति के पुजारी औ' बच्चों के प्यारे थे
लाखों देशवासियों की आँखों के तारे थे
गुटनिरपेक्षता व पंचशील की वे जान भी तो थे॥ जन-जन···

मोतीलाल के लाल सचमुच थे कमाल
लेखन के क्षेत्र में भी कर दिया धमाल
'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' की शान भी तो थे॥ जन-जन···

आजादी की लड़ाई में न इनका जवाब था
शोलों की धधक में भी हिमानी मिजाज था
गाँधी की अहिंसा की पहचान भी तो थे॥ जन-जन···

जनता को रोजी-रोटी औ' शिक्षा दिला सके
ये और बात है कि हम तिब्बत ना पा सके
ये देश-दुनिया की उच्च-मचान भी तो थे॥ जन-जन···

हँसमुख स्वरूप उनका क्या भुला सकेंगे हम?
अफसोस भी तो है उन्हें न पा सकेंगे हम
भगवान् की इच्छा के निगेबहान भी तो थे॥ जन-जन···

—सुनील श्रीवास्तव 'श्री'

खूब लड़ी मरदानी

(19 नवंबर, रानी लक्ष्मीबाई जयंती)

बुंदेले हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी,
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसीवाली रानी थी।

सिंहासन हिल उठे, राजवंशों ने भृकुटी तानी थी,
बूढ़े भारत में भी आई, फिर से नई जवानी थी,
गुमी हुई आजादी की कीमत सबने पहचानी थी,
दूर फिरंगी को करने की, सबने मन में ठानी थी,
चमक उठी सन सत्तावन में, वह तलवार पुरानी थी।

कानपूर के नाना की मुँहबोली बहन 'छबीली' थी,
लक्ष्मीबाई नाम, पिता की वह संतान अकेली थी,
नाना के संग पढ़ती थी, वह नाना के संग खेली थी,
बरछी, ढाल, कृपाण, कटारी, उसकी यही सहेली थीं,
वीर शिवाजी की गाथाएँ, उसको याद जबानी थीं।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी वह, स्वयं वीरता की अवतार,
देख मराठे पुलकित होते उसकी तलवारों के वार,
नकली युद्ध, व्यूह की रचना और खेलना खूब शिकार,
सैन्य घेरना, दुर्ग तोड़ना, ये थे उसके प्रिय खिलवार,
महाराष्ट्र, कुल देवी उसकी भी आराध्य भवानी थी।

हुई वीरता की वैभव के साथ सगाई झाँसी में,
ब्याह हुआ रानी बन आई, लक्ष्मीबाई झाँसी में,
राजमहल में बजी बधाई, खुशियाँ छाईं झाँसी में,
चित्रा ने अर्जुन को पाया, शिव को मिली भवानी थी।

उदित हुआ सौभाग्य मुदित, महलों में उजियाली छाई,
किंतु कालगति चुपके-चुपके, काली घटा घेर लाई,
तीर चलानेवाले कर में, उसे चूड़ियाँ कब भाईं,
रानी विधवा हुई, हाय! विधि को भी नहीं दया आई,
नि:संतान मरे राजा जी, रानी शोक समानी थी।

बुझा दीप झाँसी का तब डलहौजी मन में हरषाया,
राज्य हड़प करने का उसने वह अच्छा अवसर पाया,
फौरन फौजें भेज दुर्ग पर अपना झंडा फहराया,
लावारिस का वारिस बनकर ब्रिटिश राज झाँसी आया,
अश्रुपूर्ण रानी ने देखा झाँसी हुई विरानी थी।

अनुनय-विनय नहीं सुनता है, विकट शासकों की माया,
व्यापारी बन दया चाहता था यह जब भारत आया,
डलहौजी ने पैर पसारे, अब तो पलट गई काया,
राजा और नवाबों को भी उसने पैरों ठुकराया,
रानी दासी बनी, बनी वह दासी अब महारानी थी।

छीनी राजधानी देहली की, लखनऊ छीना बातों-बात,
कैद पेशवा था बिठूर में हुआ नागपुर का भी घात,
उदेपूर, तंजौर, सतारा, करनाटक की कौन बिसात,
जबकि सिंध, पंजाब, ब्रह्म पर अभी हुआ था वज्र निपात,
बंगाले, मद्रास आदि की भी तो वही कहानी थी।

रानी रोई रनिवासों में, बेगम गम से थीं बेजार,
उनके गहने कपड़े बिकते थे कलकत्ते के बाजार,

सरे आम नीलाम छापते थे, अंग्रेजों के अखबार,
नागपुर के जेवर ले लो, लखनऊ के नौलख हार,
यों परदे की इज्जत परदेसी के हाथ बिकानी थी।

कुटियों में थी विकल वेदना महलों में आहत अपमान,
वीर सैनिकों के मन में था अपने पुरखों का अभिमान,
नाना धुंधूपंत पेशवा जुटा रहा था सब सामान,
बहिन छबीली ने रणचंडी का कर दिया प्रकट आह्वान,
हुआ यज्ञ आरंभ उन्हें तो सोई ज्योति जगानी थी।

महलों ने दी आग झोंपड़ीं ने ज्वाला सुलगाई थी,
यह स्वतंत्रता की चिंगारी अंतरतम से आई थी,
झाँसी चेती, दिल्ली चेती, लखनऊ लपटें छाई थीं,
मेरठ, कानपुर, पटना ने भारी धूम मचाई थी,
जबलपुर, कोल्हापुर में भी कुछ हलचल उकसानी थी।

इस स्वतंत्रता महायज्ञ में कई वीरवर आए काम,
नाना धुंधूपंत ताँतिया, चतुर अजीमुल्ला सरनाम,
अहमदशाह मौलवी ठाकुर कुँवरसिंह सैनिक अभिराम,
भारत के इतिहास गगन में अमर रहेंगे जिनके नाम,
लेकिन आज जुर्म कहलाती, उनकी जो कुर्बानी थी॥

इनकी गाथा छोड़ चलें हम झाँसी के मैदानों में,
जहाँ खड़ी है लक्ष्मीबाई मर्द बनी मर्दानों में,
लेफ्टीनेंट बोकर आ पहुँचा आगे बढ़ा जवानों में,
रानी ने तलवार खींच ली, हुआ द्वंद्व असमानों में,
जख्मी होकर बोकर भागा उसे अजब हैरानी थी।

रानी चढ़ी कालपी आई कर सौ मील निरंतर पार,
घोड़ा थककर गिरा भूमि पर गया स्वर्ग तत्काल सिधार,
यमुना तट पर अंग्रेजों ने फिर खाई रानी से हार,

विजयी रानी आगे चल दी किया ग्वालियर पर अधिकार,
अंग्रेजों के मित्र सिंधिया ने छोड़ी रजधानी थी।

विजय मिली, पर अंग्रेजों की फिर सेना घिर आई थी,
अब के जनरल स्मिथ सम्मुख था, उसने मुँह की खाई थी,
काना और मंदिरा सखियाँ रानी के सँग आई थीं,
युद्धक्षेत्र में उन दोनों ने भारी मार मचाई थी,
पर पीछे ह्यूरोज आ गया, हाय घिरी अब रानी थी।
तो भी रानी मार-काट कर चलती बनी सैन्य के पार,
किंतु सामने नाला आया, था यह संकट विषम अपार,

घोड़ा अड़ा, नया घोड़ा था, इतने में आ गए सवार,
रानी एक, शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार,
घायल होकर गिरी सिंहनी, उसे वीरगति पानी थी।
रानी गई सिधार, चिता अब उसकी दिव्य सवारी थी,
मिला तेज से तेज, तेज की वह सच्ची अधिकारी थी,
अभी उम्र कुल तेईस की थी, मनुज नहीं अवतारी थी,
हमको जीवित करने आई, बन स्वतंत्रता नारी थी,
दिखा गई पथ, सिखा गई जो हमको सीख सिखानी थी।

जाओ रानी, याद रखेंगे, ये कृतज्ञ भारतवासी,
यह तेरा बलिदान जगावेगा स्वतंत्रता अविनाशी,
होवे चुप इतिहास, लगे सच्चाई को चाहे फाँसी,
हो मदमाती विजय, मिटा दे गोलों से चाहे झाँसी,
तेरा स्मारक तू ही होगी, तू खुद अमर निशानी थी।

बुंदेलों, हरबोलों के मुँह हमने सुनी कहानी थी।
खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसीवाली रानी थी॥

—सुभद्राकुमारी चौहान

झाँसी की रानी की समाधि पर

(19 नवंबर, रानी लक्ष्मीबाई जयंती)

इस समाधि में छिपी हुई है
एक राख की ढेरी।
जलकर जिसने स्वतंत्रता की
दिव्य आरती फेरी॥
यह समाधि, यह लघु समाधि, है
झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है
लक्ष्मी मर्दानी की॥

यहीं कहीं पर बिखर गई वह
भग्न विजय-माला सी।
उसके फूल यहाँ संचित हैं
है यह स्मृति-शाला सी।
सहे वार पर वार अंत तक
लड़ी वीर बाला-सी।
आहुति-सी गिर चढ़ी चिता पर
चमक उठी ज्वाला-सी॥

बढ़ जाता है मान वीर का
रण में बलि होने से।

मूल्यवती होती सोने की
भस्म यथा सोने से॥
रानी से भी अधिक हमें अब
यह समाधि है प्यारी॥
यहाँ निहित है स्वतंत्रता की
आशा की चिनगारी॥
इससे भी सुंदर समाधियाँ
हम जग में हैं पाते।
उनकी गाथा पर निशीथ में
क्षुद्र जंतु ही है गाते॥
पर कवियों की अमर गिरा में
इसकी अमिट कहानी।
स्नेह और श्रद्धा से गाती
है वीरों की बानी॥
बुंदेले हरबोलों के मुख
हमने सुनी कहानी।
खूब लड़ी मर्दानी वह थी
झाँसी वाली रानी॥
यह समाधि, यह चिर समाधि
हैं झाँसी की रानी की।
अंतिम लीलास्थली यही है।
लक्ष्मी मर्दानी की॥

— सुभद्राकुमारी चौहान

गुरु नानक जयंती
(कार्तिक पूर्णिमा)

गुरु नानक सा गुरु नहीं, जाना जिसने साँच।
जगती तड़पे या जले, नानक लगे न आँच॥
खत्री कालू पालया, मात सुलक्खी पूत।
देव पुरुष तपसी ऋषि या साईं अवधूत॥
अक्षर ज्ञान लिया नहीं, पोथी पढ़ी न रीत।
बचपन से सद्ज्ञान ले, नानक सीखी प्रीत॥
सबके बाहर भी वही सबके भीतर एक।
नीचे ऊपर सब जगह, नानक जानी टेक॥
सद्गुरु साईं हरि वहीं दुःख-सुख का आधार।
उसको पावै सो मना, जा में गहरा प्यार॥
सारी दुनिया घूम के, मिले नहीं करतार।
गुरु के छूते भीतरे, साहब के दीदार॥
नानक शरणे आ गए, शाह, पीर धनवान।
निर्मल निश्छल, समर्पित, साधु किया कल्याण॥
नानक से सद्गुरु मिले आसुतोष भगवान।
दिव्य, ज्योति, दर्शन किए, कह पतंग धर ध्यान॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

प्रदूषण

(2 दिसंबर, प्रदूषण नियंत्रण दिवस)

इस नगरी में दम घुटता है
मन दुखता है, दिल कुढ़ता है।
हर तरफ है बदबू फैली
हर सड़क है कितनी मैली?
कूड़े के जो ढेर लगे हैं
कुत्ते-सूअर वहीं खड़े हैं।

बरसों के पानी के गड्ढे
उनमें हैं मच्छरों के अंडे।
मक्खियाँ कितनी भिनभिनाती
बीमारी का राग सुनाती,
खुली हवा के लिए तरसते
धूल-मिट्टी के रेले उड़ते।

इधर भी ट्रैफिक जाम लगा है,
उधर भी ट्रैफिक जाम लगा है।
वायु गंदी और विषैली
मुखमंडल पर कालिख फैली।
शाम को काम से जब घर आते
मुँह पर जैसे कालिख पोते।

हर गाड़ी में ढोल हैं बजते
इतने ऊँचे, कुछ नहीं सुनते।
टी.वी. मुहल्ले वाले सुनते
टेप-रिकॉर्डर ऊँचे बजते
ऐसा लगता सब बहरे हैं
मुँह बनाते सब चेहरे हैं।

इस नगरी की बात निराली
सब ने अपने घर में गंदगी पाली,
गंदगी से तुम नाता तोड़ो
स्वच्छता से तुम नाता जोड़ो।
पेड़ लगाओ, प्रदूषण भगाओ
स्वच्छ हवा और जीवन पाओ।

—कपिल गंजू

पेड़न कू मत काटो

(2 दिसंबर, प्रदूषण नियंत्रण दिवस)

भइया पेड़न कू मत काटो, बोले ग्वालन ते गोपाल।
ग्वालन ते गोपाल, बोले ग्वालन ते गोपाल।
भइया पेड़ कू मत काटो, बोले ग्वालन ते गोपाल॥

साँची बात बताय दउँ भइया।
पेड़ सहारे जीवन नइया।
एकउ पल फिर श्वास न आवे।
पड़े पवन को काल।
भैया पेड़न कू मत काटो,
बोले ग्वालन ते गोपाल॥

हरे-भरे पेड़न की डारी।
पशु पंछिन की राखन हारी।
पेट भरे, अरु छाया दे के,
सब कू करै निहाल।
भइया पेड़ने कू मत काटो,
बोले ग्वालन ते गोपाल॥

अपने आप सूख जो जावैं।
उनकू हम बेशक कटवावैं।
बनै साज सामान काठ को,

घर को सब धन माल॥
भइया पेड़न कू मत काटो,
बोले ग्वालन ते गोपाल॥

एक कटै नौ पेड़ लगाइयो।
सुख संपदा सदा तुम पइयो।
साधन सरल घने वैभव को,
कोई चाल न जाल॥
भइया पेड़न कू मत काटो,
बोले ग्वालन ते गोपाल॥

जो मानेगौ बात हमारी।
सो मानवता को हितकारी।
मानूँ भगत ताहि मानव कू,
वाके काटूँ सब जंजाल॥
भइया पेड़न कू मत काटो,
बोले ग्वालन ते गोपाल॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

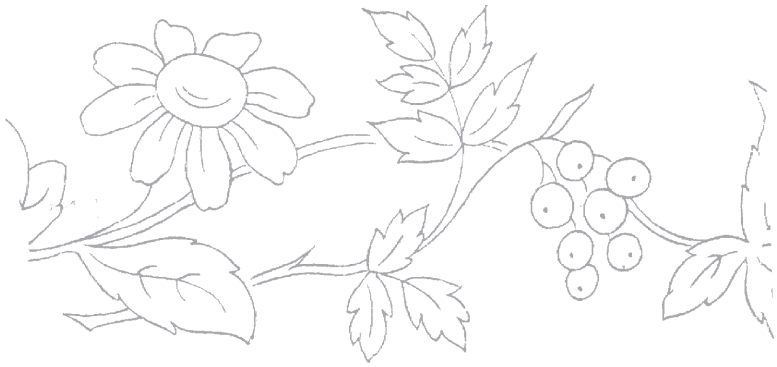

झंडा ऊँचा रहे हमारा

(7 दिसंबर, झंडा दिवस)

विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।
सदा शक्ति सरसाने वाला
प्रेमसुधा बरसाने वाला
वीरों को हरषाने वाला
मातृभूमि का तन-मन सारा!
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

स्वतंत्रता के भीषण रण में
लड़कर जोश बढ़े क्षण-क्षण में
काँपे शत्रु देखकर मन में
मिट जाए भय संकट सारा
झंडा ऊँचा रहे हमारा।
इस झंडे के नीचे निर्भय
लें स्वराज्य हम अविचल निश्चय
बोलो भारत माता की जय
स्वतंत्रता है ध्येय हमारा।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

आओ प्यारे वीरो आओ
देश धर्म पर बलि-बलि जाओ

एक साथ सब मिलकर गाओ
प्यारा भारत देश हमारा।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

इसकी शान न जाने पाए
चाहे जान भले ही जाए
विश्व विजय करके दिखलाएँ
तब होवे प्रण पूर्ण हमारा।
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

—श्यामलाल गुप्त पार्षद

□

त्रिपथ तिरंगा

(7 दिसंबर, झंडा दिवस)

प्रजातंत्र के संगम पर है, संज्ञा का आकार तिरंगा।
सत्यं शिवं सुंदरम् लेकर, अंबर में उड़ती है गंगा।
यह अतीत की नई प्रगति है, इसमें जन-जन की अभिलाषा।
अंबर को संदेश दे रही, लहर लहर युग की परिभाषा॥

एक ज्योति की प्रकृति तिरंगी, रंग-बिरंगे रंग देखती।
जीवन की बत्ती जल-जलकर, अपने कटते अंग देखती।
जीवन और मुक्ति देती है, बहती हुई त्रिवेणी गंगा।
कपड़े का टुकड़ा मत समझो, बलिदानों का खून तिरंगा॥

इसकी लहरों और हवा से, हमने दीपक जलते देखे।
इस झंडे के लिए देश ने, धड़ से शीश उखड़ते देखे।
इसकी लहर-लहर में गति है, इसकी लहर-लहर में गंगा।
तीनों लोकों का दीपक है, फर-फर उड़ता हुआ तिरंगा॥

इस दीपक पर जलने वाले, परवानों के ढेर पड़े हैं।
मरघट की मिट्टी में देखो, अरमानों के ढेर पड़े हैं।
इस गंगा में तैर रही है, छलनी हुई बापू की छाती।
इस झंडे की लहर-लहर पर, कविता मचल-मचलकर गाती॥

इस झंडे में लहराता है, हिमगिरि की आँखों का पानी।
यह 'आजाद हिंद' सेना के, बलिदानों की अमर कहानी।
यह झंडा पतवार बनाकर, कूद पड़े हम महा सिंधु में।
इस झंडे का मान भरा है, जलते हुए सुहाग बिंदु में॥

यह ध्वज ले बंदी हाथों ने, लोहे के सींखचे मरोड़े।
मानवता की फाँसी खोली, राजाओं के बंधन तोड़े।
स्वप्न सत्य हो गया, किंतु फिर स्वप्न सत्य बनता जाता है।
सुख से राजाओं का नाता, दुःख से जनता का नाता है॥

आज तिरंगा डाल-डाल पर, 'तीन पात' भी देख रहा है।
जिसकी सदियों से आशा थी, वह प्रभात भी देख रहा है।
रक्त दिया था कभी, आज तो आँखों के आँसू देते हैं।
प्राण दिए थे कभी, आज तो शव भी दाँत नोच लेते हैं॥

सावधान होकर सुन लो अब, इस झंडे का मान न देंगे।
शोषित का बलिदान दिया है, आँसू का हम दान न देंगे।
यह निशान है प्रजातंत्र का, हम इसका अभिमान न देंगे।
खून बहुत है पर पीने को, एक बूँद भी दान न देंगे॥

इस झंडे के लिए देश के सोते शिशु हुंकार उठेंगे।
ज्वलित 'पूतना' की छाती पर, मेरे 'कृष्ण' पुकार उठेंगे।
हम अब तूफानी सागर को, और न आगे बढ़ने देंगे।
खारी अश्रु इसे पी लेंगे, पर्वत इसे न चढ़ने देंगे॥

अपने हों या हों परदेशी, फूल किसी ने भी यदि तोड़े।
तो 'चेतक' से गरज उठेंगे, दुश्मन की छाती पर घोड़े।
मैं हिंसा उसको कहता हूँ, जो अत्याचारों से डर ले।

जलते हुए सुहाग देखकर, जो अपने घर में चुप रह ले॥
संभव है फिर मिले चुनौती, तुम्हें पुकारें आर्त पुकारें।
अश्रुधार बहने से पहले, तुम पैनी कर लो तलवारें।
रुकें आँसुओं की धाराएँ, धधक शुष्क काष्ठ की ज्वाला।
जीवन की हाला ले आओ, आज फोड़ दो विष का प्याला॥

काश्मीर-सी मृदु सुंदरता, शोणित का सिंदूर चाहती।
वह जयमाला लिये खड़ी है, पर कायरता दूर चाहती।
उठो, लगा दो भव्य भाल पर, अपने अरमानों का टीका।
इसके बिना व्यर्थ है भारत, इसके बिना स्वर्ग भी फीका॥

फूल-फूल पत्ती-पत्ती पर, यह झंडा लहराते रहना।
शपथ तुम्हें अपने बच्चों की, यह झंडा फहराते रहना।
मान रखना इस झंडे का, वीरो! तुमको शपथ चिता की।
इस पर आँच न आने पाए, कसम तुम्हें है राष्ट्रपिता की॥

इस झंडे के गीत मनोहर, मेरी कोयल गाती रहना।
अंबर की परियो! झंडे पर, फूल सदा बरसाती रहना।
इस झंडे के डगमग पग से, शेषनाग तुम लिपटे रहना।
इसके बलिदानों की गाथा, तारो तुम युग-युग तक कहना॥

— रघुवीरशरण 'मित्र'

□

कारगिल-विजय दिवस
(16 दिसंबर)

(1)

लगता है ताजे लोहू पर जमी हुई है काई,
लगता है फिर भटक गई है भारत की तरुणाई।
काई चीरो ओ! रणधीरो!
ओ! जननी की भाग्य लकीरो!
बलिदानों का पुण्य मुहूरत आता नहीं दुबारा,
जीना हो तो मरना सीखो, गूँज उठे यह नारा!
सारा देश हमारा–केरल से··· ॥

(2)

घायल अपना ताजमहल है घायल गंगा मैया
टूट रहे हैं तूफानों में नैया और खिवैया
तुम नैया के पाल बदल दो
तूफानों की चाल बदल दो
हर आँधी का उत्तर हो तुम, तुमने नहीं विचारा,
जीना हो तो मरना सीखो, गूँज उठे यह नारा।
सारा देश हमारा–केरल से··· ॥

(3)

कहीं तुम्हें परबत लड़वा दे, कहीं लड़ा दे पानी,
भाषा के नारों में गुम है, मन की मीठी बानी।
आग लगा दो इन नारों में
इज्जत आ गई बाजारों में।
कब जागेंगे सोए सूरज, कब होगा उजियारा,
जीना हो तो मरना सीखो, गूँज उठे यह नारा।
सारा देश हमारा–केरल से··· ॥

(4)

संकट अपना सजग सहोदर इसको कंठ लगाओ,
क्या बैठे हो न्यारे–न्यारे, मिलकर बोझ उठाओ।
भाग्य भरोसा कायरता है?
कर्मठ देश कहाँ मरता है।
सोचो तुमने इतने दिन में कितनी बार हुंकारा,
जीना हो तो मरना सीखो गूँज उठे यह नारा।
सारा देश हमारा–केरल से··· ॥

— बालकवि बैरागी

□

विजय-दिवस
(16 दिसंबर)

जय हो हिंदुस्तान की!
जय हर वीर जवान की!
हर आँधी है बहन हमारी, भाई हर तूफान है,
बाँहों में फौलाद जड़ा है, सीना ज्यों चट्टान है।
रोक सके जो तुम्हें अभी तक, नहीं बनीं वे गोलियाँ,
निकल पड़ो तुम समर भूमि में लेकर अपनी टोलियाँ।

उठो अपना बल तोलो,
तोपों के जबड़े खोलो,
ऐसा रे धावा बोलो,
शत्रु को नानी याद आए,
जय हो हिंदुस्तान की!
जय हर वीर जवान की!
रक्षा हमको करनी है माँ-बहनों के सिंदूर की,
हर हिंदू के चूल्हे की, हर मुसिलम के तंदूर की।
मंदिर अपना, मसिजद अपनी, अपना हर गुरुद्वारा है,
और हिमालय तो हमको प्राणों से ज्यादा प्यारा है।

मरने को जीवन कर दो,
जन-जन का दुखड़ा हर दो,
बगिया खिली न मुरझाए—
जय हो हिंदुस्तान की!
जय हर वीर जवान की!

—गोपालदास नीरज

□

दुश्मन देश का हत्यारा है

(कारगिल विजय दिवस)

सौ-सौ बैरी को बस काफी अपना एक जवान है,
हर सैनिक राणा प्रताप है, हर थापा चौहान है,
तेग शिवाजी की फिर से मचल उठी है म्यान में,
चंगेजों की कब्र बनेगी, शायद हिंदुस्तान में।
संकट आया देश पर,
धार धरो आवेश पर,
हमको भाई-भाई कहकर, छुरा पीठ में मारा है।
दुश्मन देश का हत्यारा है।

कोटनीस के बलिदानों को भुला दिया इस शत्रु ने,
ब्रह्मपुत्र का हृदय चीरकर रक्त पिया इस शत्रु ने,
वक्त पड़े हिंदुस्तानी से सबक लिया इस शत्रु ने,
पग पखार, गौतम के सिर पर वार किया इस शत्रु ने,
दोहरी-तिहरी मात दो,
नेहरू के दूधिया-कपोतों पर उठ गया दुधारा है।
दुश्मन देश का, हत्यारा है।

'जियो और जीने दो' वाली बात न जिसको प्यारी है,
दुनिया की नजरों में ऐसा राष्ट्र ही अत्याचारी है,

हमको है मालूम दुश्मन का जन-बल हमसे भारी है,
पर न पैर होते चोरों के अब भगने की तैयारी है,
ओ विश्वासी साथियो!
ओ अविनाशी साथियो!
आज नहीं, तो यह निश्चय है कल का रोज हमारा है।
दुश्मन देश का हत्यारा है।

हम अर्जुन के वंशज नेहरू जैसा अपना सारथी,
किया अन्याय का नाश, न्याय की सदा उतारी आरती,
हमें महाभारत वाली रण की भूमिका पुकारती,
दुर्योधनी चाल शत्रु की, प्रगति हमारी पारथी
अगर प्रतिज्ञा कर डाली,
बात न जाने दी खाली,
चक्रव्यूह रचने वाले को बदला दिया करारा है।
दुश्मन देश का हत्यारा है।

— गोपालदास नीरज

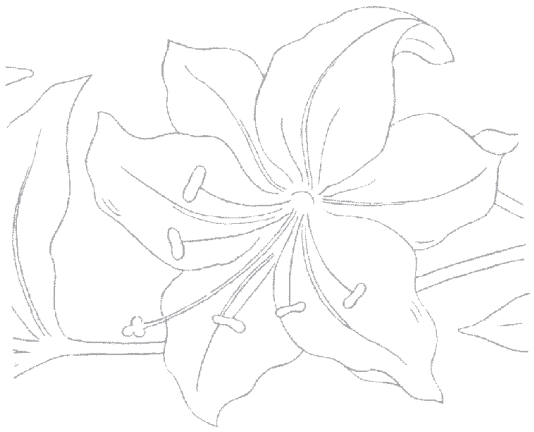

बढ़ना जवान रे

(विजय-दिवस 1971)

माटी के कण माँगें रक्त बलिदान रे।
प्रहरी सजग आगे बढ़ना जवान रे।
रुका सिकंदर जिसके आगे, घर सेना लौटाई रे।
निर्भय तुम्हारे पुरु ने गरदन न झुकाई रे।
विक्रम जगाए तेरा, सुप्त अभिमान रे।
प्रहरी सजग आगे··· ॥ 1 ॥

प्रत्यंचा के लिए दिया था, अबलाओं ने केश रे।
बहनें भी दे देंगी गहने, संकट में देश रे।
भामा की बेटी तेरी आज पहचान रे।
प्रहरी सजग आगे··· ॥ 2 ॥

स्वतंत्रता को छोड़ भूख की, किसने सुनी दुहाई रे।
घासों की रोटी तेरे, राणा ने खाई रे।
कल के लिए आज, व्रत ले महान रे।
प्रहरी सजग आगे··· ॥ 3 ॥

नव भारत का उज्ज्वल तारा, प्यारा शहीद रे।
तोपों की लपटों में गरजा हमीद रे।
रह-रह जगाती उसकी आखिरी जबान रे।
प्रहरी सजग आगे··· ॥ 4 ॥

— कमला प्रसाद द्विवेदी

□

सभाएँ बंद कर चल खेत में या कारखानों में

(23 दिसंबर, किसान दिवस)

जुलूसों और नारों से,
प्रदर्शन या प्रचारों से,
न कोई देश जीता है,
सभाएँ बंद कर, चल खेत में या कारखानों में।
सिपाही के लिए कपड़े, जवानों के लिए रोटी,
सभाएँ बुन नहीं सकती, लगी है जान की बाजी,
यह तो वक्त है कुछ काम कर, कुछ काम कर प्यारे,
विवादों को उठाने से,
न कोई देश जीता है
सभाएँ बंद कर, चल खेत में या कारखानों में।

— रामअवतार त्यागी

□

हम और हमारी धरती
(23 दिसंबर)

एक गगन के तारे हैं हम, एक बाग के फूल,
सौ-सौ स्वर्गों से भी प्यारी इस धरती की धूल।
सूरज सोने के हाथों से
हम सबको दुलराता,
चंदा चाँदी लुटा-लुटाकर
हम सबको हुलसाता।
हमको प्रेरित करते रहते अपने छंब-चुशूल,
सौ-सौ स्वर्गों से भी प्यारी इस धरती की धूल।
यह उत्तुंग हिमालय हम में
ऊँची चाह जगाता।
यह सुरसरि का पानी मन को
परम पवित्र बनाता।
हम सबकी रक्षा-हित उद्यत शिव का तीक्ष्ण त्रिशूल,
सौ-सौ स्वर्गों से भी प्यारी इस धरती की धूल।
बादल अमृत बरसाने को
नभ में घिर-घिर आते,
खेतों में किसान सतरंगी
रंगोली सजवाते।

कर लेते उपयोग सामने जामुन हों कि बबूल,
सौ-सौ स्वर्गों से भी प्यारी इस धरती की धूल।
हम अपना इतिहास बनाते
हम रचते भूगोल,
हम सभ्यता और संस्कृति के
निश्चित करते मोल।
कर लेते कठोर श्रम से, जग को अपने अनुकूल,
सौ-सौ स्वर्गों से भी प्यारी, इस धरती की धूल।
पलक उठे तो आशाओं के
इंद्रधनुष तन जाएँ,
भृकुटि तने तो घने निराशा
के बादल छँट जाएँ।
लगते हमें दु:ख और सुख तो जीवन-सरि के कूल,
सौ-सौ स्वर्गों से भी प्यारी इस धरती की धूल।

— डॉ. बद्री प्रसाद पंचोली

□

महामना मालवीय जयंती
(25 दिसंबर)

जब-जब किया भाव जल मंथन मन में जन्म लिया श्रद्धा ने।
तब-तब मैंने अंतर्तम से महामना को नमन कर लिया।
जैसे बीज घुला धरती में तरुवर एक विशाल बन गया।
महामना की अनुकंपा ने सुरभित सारा चमन कर दिया।
महामना को नमन कर लिया॥

मदन स्वयं मोहन भी तुम थे तुम काशीवासी शिव शंकर।
जन-जन की वेदना निरंतर सुख से पीते रहे सदा तुम।
दीनों की पीड़ा से तुमने नयनों का शृंगार कर दिया।
महामना को नयन कर दिया॥

ज्ञानी, ध्यानी औघड़ दानी पर अभिमान नहीं छू पाया।
साहस की साकार ज्योति थे बीहड़ वन में पंथ बनाया।
कण-कण कर एकत्र मधुप बन ज्ञानकोष संचयन कर लिया।
महामना को नमन कर दिया॥

धर्मराज थे तुम कलियुग में नेताओं में अग्रगण्य थे।
राजनीति और धर्म समन्वय, रूप और सादगी निलय थे।
जीवन भर प्रेरणा परोसी तिल तन-मन हवन कर दिया।
महामना को नमन कर दिया॥

—आचार्य मायाराम 'पतंग'

वीर ऊधम सिंह की शहादत
(26 दिसंबर)

तेरे खूँ से शहीद ऊधम सिंह,
हिंद का हर चिराग रोशन है।
तेरी कुरबानियों के सदके ही,
आज अपना दिमाग रोशन है।

तेरे हलके से एक झटके से,
बादशाहों के तख्त डोल गए।
'जलियाँवाले का मैंने बदला लिया',
आसमाँ तक तेरे ये बोल गए॥

तेरी मिट्टी तो उड़ गई लेकिन,
आँधियों के कदम उखाड़ गई।
तेरी आवाज दब गई बेशक,
जलजलों को मगर पछाड़ गई॥

क्या मिटाएँगे आसमाँ उसको,
नक्श जो तू जमीं पे छोड़ गया।
खून तेरा बिखर गया लेकिन,
जुल्म की सरहदों को तोड़ गया॥

बदला लेने की आरज़ू तेरी,
तेरे सीने का खून चाट गई।
तेरी गरदन तो कट गई लेकिन,
जुल्म का बंद-बंद काट गई॥

—नंदा राही 'देहलवी'

□

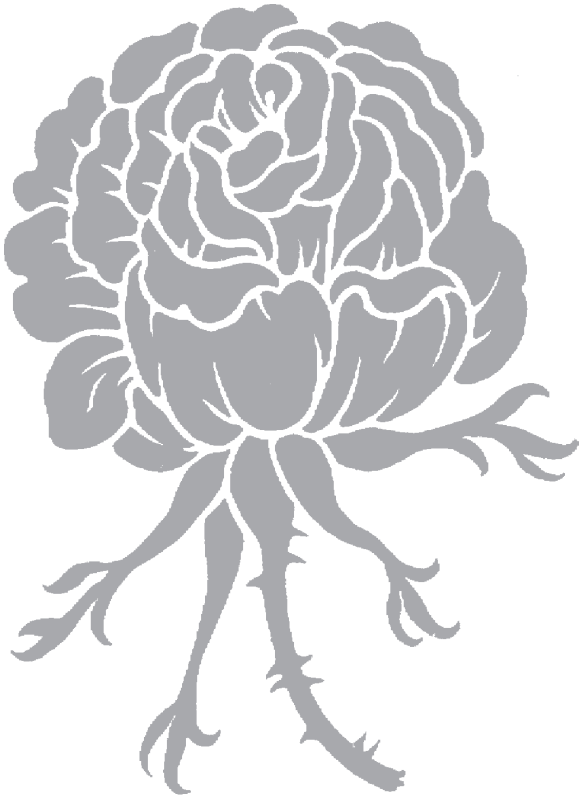

तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो

तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो, तुम्ही हो बंधु, सखा तुम्ही हो।
तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो, तुम्ही हो बंधु, सखा तुम्ही हो।

तुम्ही हो साथी, तुम्ही सहारे, कोई न अपना, सिवा तुम्हारे।
तुम्ही हो साथी, तुम्ही सहारे, कोई न अपना, सिवा तुम्हारे।
तुम्ही हो नैया, तुम्ही खिवैया, तुम्ही हो बंधु, सखा तुम्ही हो।
तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो, तुम्ही हो बंधु, सखा तुम्ही हो।

जो खिल सके न, वो फूल हम हैं, तुम्हारे चरणों की, धूप हम हैं।
जो खिल सके न, वो फूल हम हैं, तुम्हारे चरणों की, धूप हम हैं।
दया की दृष्टि सदा ही रखना, तुम्ही हो बंधु, सखा तुम्ही हो।
तुम्ही हो माता, पिता तुम्ही हो, तुम्ही हो बंधु, सखा तुम्ही हो॥

□

ईश-विनय

इतनी शक्ति हमें देना दाता
मनका विश्वास कमजोर हो न
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो न।

दूर अज्ञान के हों अँधेरे
तू हमें ज्ञान की रोशनी दे
हर बुराई से बचते रहें हम
जितनी भी दे भली जिंदगी दे

बैर हो न किसी का किसी से
भवना मन में बदले की हो न।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो न॥

हम न सोचें हमें क्या मिला है
हम ये सोचें किया क्या है अर्पण
फूल खुशियों के बाँटें सभी को
सबका जीवन ही बन जाए मधुबन

अपनी करुणा का जल तू बहाकर
करदे पावन हरेक मनका कोना।
हम चलें नेक रस्ते पे हमसे
भूल कर भी कोई भूल हो न॥

इतनी शक्ति हमें देना दाता
मन का विश्वास कमजोर हो न॥

□

ऐ मालिक तेरे बँदे हम

ऐ मालिक तेरे बंदे हम
ऐसे हों हमारे करम
नेकी पर चलें और बदी से टलें
ताकि हँसते हुए निकले दम।

ये अँधेरा घना छा रहा
तेरा इनसान घबरा रहा
हो रहा बेखबर, कुछ ना आता नजर
सुख का सूरज छुपा जा रहा
है तेरी रोशनी में जो दम
तू अमावस को कर दे पूनम।

नेकी पर चलें और बदी से टलें।
ताकि हँसते हुए निकले दम॥

जब जुल्मों का हो सामना
तब तू ही हमें थामना
वो बुराई करें, हम भलाई करें
नहीं बदले की हो कामना
बढ़ उठे प्यार का हर कदम
और मिटे बैर का ये भरम।

नेकी पर चलें और बदी से टलें
ताकि हँसते हुए निकले दम॥

□□□